जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

दिसम्बर २०१७ द्वितीय पक्ष पृष्ठः ५२ मूल्यः ७:०० रुपये

2018
Happy New Year

निलाम्भ नयन मणिमय काया ध्यानस्थ भाव मनहारी है,
हे पार्श्वनाथ करूणा सागर, प्रभु तीन लोक आभारी है।
प्रिय इन्द्र अरु धरणेन्द्र नहीं, न मेघमाली से द्रोह मनोई,
यह समता भाव है मन भावन उपकारी छवि अति प्यारी है॥

॥ जय आत्म-आनन्द-देवेनद्र-शिव॥ ॥ णमोऽत्थुणं समणस्य भगवओ महावीरस्स ॥ ॥ श्रमण संघ जयवन्त हो ॥

हार्दिक कृतज्ञता

संघ सेतू, उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा. आदि ठाणा-10 का आगामी 2018 का संयुक्त चातुर्मास गणेशबाग, बेंगलोर में

उपप्रवर्तक, भंते
पूज्य श्री पारसमुनिजी म.सा.

संघ सेतू, संघ रत्न, उपाध्याय
पूज्य श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा.

सलाहकार, वाणी के जादूगर
पूज्य श्री रमणीकमुनिजी म.सा.

युग प्रधान आचार्य ध्यान योगी डॉ. शिव मुनि जी म.सा., युवाचार्य भगवन श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा., वरिष्ठ प्रवर्त्तक लोकमान्य सन्त पू. श्री रूपचन्दजी म. सा. रजत , श्रमण संघीय पू. श्री सौभाग्य मुनिजी म. सा. कुमुद की आज्ञा से श्रमणसंघीय की उपाध्याय प्रवर संघ सेतु- संघ रत्न पू. श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा., उपप्रवर्तक भंते पूज्य श्री पारस मुनि जी म.सा., श्रमण संघीय सलाहकार वाणी के जादूगर पूज्य श्री रमणीक मुनि जी म.सा. आदि ठाणा १० का आगामी सन् २०१८ का संयुक्त वर्षा वास उध्यान नगरी बैंगलोर नगर में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ चिकपेट शाखा बैंगलोर, पंजीकृत के तत्वावधान में घोषित किये जाने पर पूज्यवरों के चरणों में भावपूर्ण कृतज्ञता करते हैं। यह चातुर्मास बैंगलोर की हृदय स्थली कर्नाटक गज केसरी, घोर तपस्वी श्री गणेशीलाल जी म.सा. की कृपा स्थली 'गणेश बाग' में होने जा रहा है।

कृतज्ञता पूर्वक चरणों में कोटिशः नमन–

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, चिकपेट, शाखा, बेंगलोर (पंजीकृत)

विजयराज लुणिया	ज्ञानचन्द बाफणा	प्रकाशचन्द बम्ब	गौतमचन्द धारीवाल	धर्मीचन्द कांठेड़
संरक्षक : 9845025883	अध्यक्ष : 9341221486	कार्याध्यक्ष : 9845021820	महामंत्रीः 9845149443	कोषाध्यक्ष : 9844827848

पवन धारीवाल	विनोद गुलेच्छा	रंजना गोलेच्छा	पुष्पाबाई बोहरा
युवा अध्यक्ष	युवा मंत्री	महिला अध्यक्ष	महिलामंत्री

समस्त कार्यकारिणी पदाधिकारीगण एवम् समस्त सदस्यगण

ADVT.

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

वर्ष-60 अंक-24 दिसम्बर 2017 द्वितीय पक्ष 23-24 दिसम्बर मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा की सूचना		10
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की सूचना		11
मुक्ति का कारण ...	आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.	13
कैसे करें इस कैलेण्डर ...	युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.	14
योग ध्यान और ...	उपाध्याय पू. श्री विशालमुनि जी म.	16
संत, लेखक, विचारक ..,	प्रवर्तक पू. श्री सुमन मुनि जी म.	19
चतुर्याम धर्म प्रणेता ...	प्रवर्तक पू. डॉ. राजेन्द्र मुनि जी म.	21
दृष्टि आत्म गुणों पर हो	प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीष मुनि जी म.	22
मन में खुशी छुपाए ...	पू. श्री ऋषि मुनि जी म.	23
मानवीय जिज्ञासा ..	पू. डॉ. अक्षयज्योति जी म.	24
सन्त ने कैसे ...	पू. डॉ. चारित्रकला जी म.	25
वर्तमान परिपेक्ष में ..	श्री अविनाश चोरड़िया जैन	26
गृहदोष में पशु-पक्षियों ...	श्री सुशील जैन	28
ऐतिहासिक तीर्थंकर ...	डॉ. दिलीप धींग जैन	29
रात 12 बजे मनाते है ...	श्री अतुल बोकरिया जैन	31
श्री चिन्तामणि स्तोत्र	श्री हुकमचंद जैन 'मेघ'	32
ध्वनि प्रदूषण का ...	श्री रजनीश जैन	33
हिमालयी ठंड में ...	डॉ. शोभानाथ लाल	34
खुशी चार आने कमाने ...	श्री एस. सी. कटारिया जैन	36
हल्दी वाली हेल्दी चाय	डॉ. कनुलाल जैन	37
नववर्ष अभिनंदन	श्रीमती प्रभा जैन	38
युवा शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ		39
समाचार प्रकाश		40
शोक समाचार		47

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः
- श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
- श्री मूलचंद जी महाराज
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
- श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
- श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः
- श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
- श्री सुमन मुनि जी महाराज
- श्री रतन मुनि जी महाराज
- श्री मदन मुनि जी महाराज
- श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
- डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः
- श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
- श्री आशीष मुनि जी महाराज
- श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः
- श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
- श्री सहज मुनि जी महाराज
- श्री सुकन मुनि जी महाराज
- श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
- श्री तारक ऋषि जी महाराज
- श्री रमणीक मुनि जी महाराज
- श्री दिनेश मुनि जी महाराज
- श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
- श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः
- श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
- श्री चंदना जी महाराज
- श्री सुधा जी महाराज
- श्री सुप्रभा जी महाराज
- श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :					
				09423962818	
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569.	2460026, 2461546	09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री वालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. बोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री वालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखबलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080 080	22383557 41221890	41223853	09448238429 09844058123	
वैय्यावच्च समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

मन का हर संकल्प पूरा हो आपका
दिल की हर ख्वाईश पूरी हो आपकी

- डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयो एवं बहनों,
सादर जय जिनेन्द्र!

2017 वर्ष सम्पन्न होने जा रहा है और हम सभी 2018 में प्रवेश करने वाले हैं। वर्ष 2018 का स्वागत करने हेतु हम सभी को पूरी तैयारी के साथ हर्ष के साथ तैयार रहना है। जैसे कि मैंने गत् अंक में लिखा था कि 2017 का लेखा-जोखा यानि व्यवसाय/कारोबार का जैसा आय-व्यय पत्रक एवं तालेबंद हम बनाते हैं। उसी तरह हमारे जीवन का वर्ष 2017 का लेखा-जोखा हमें इसीलिए बनाना है कि हमने इस वर्ष स्वार्थ के साथ-साथ कुछ परमार्थ का काम किया है क्या? परोपकार किया है क्या? जप-तप-ध्यान के माध्यम से साधना करने हेतु कुछ समय दिया है क्या? जिनवाणी सुनकर आचरण में लाने का थोड़ा सा भी प्रयास किया है क्या? इन सभी बातों का आत्म-निरीक्षण एवं आत्म-परीक्षण करते हुए हमें यह तसल्ली भी होगी कि 'हाँ' मैंने यह प्रयास किया है और उस बात के लिए मुझे खुशी है, शांति है और प्रसन्नता है।

अब हमें वर्ष 2018 के बारें में सोचना है कि इस नये वर्ष का नियोजन हमें करना है। इंगलिश में जिसे Annual Project Planning (APP) यानि पूरे वर्ष के प्रकल्पों का नियोजन, संकल्पों का नियोजन, अगर हम शुरु में ही ठीक तरह से करते हैं, तो हमें, हमारे संकल्प पूरे करने के लिये आसानी होगी।

हमारे जीवन में हर वर्ष हमारे लिये महत्त्वपूर्ण होता है, हमसे जितना भी हो सके, अच्छे काम, समाज सेवा के काम, साधु-संतों की सेवा भक्ति के काम होने चाहिए, क्योंकि वही हम हमारे साथ लेकर जा सकते है। किसी ने सही कहा है : -

काम ऐसे करो कि काम से
आपकी पहचान बन सके,
एक-एक कदम ऐसा चलों कि
पद्चिन्हों की निशानी बन सके ।
और जिन्दगी ऐसी जियो कि
वह एक मिसाल बन सके ।।

आपके सभी संकल्पों में सकारात्मक सोच हो, अपने साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण हो, गुरु-भगवंतों की सेवा हो और परिवार का उत्थान हो। मैं वर्ष 2018 के लिये आपकी कामयाबी के लिये ढ़ेर सारी शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

मन का हर संकल्प पूरा हो आपका,
दिल की हर ख्वाईश पूरी हो आपकी।
आप माँगों आसमाँ का एक तारा,
ईश्वर दे सारा आसमाँ आपको ।।

दूसरी महत्वपूर्ण बात जिसे मैं बार-बार दोहराता हूँ कि हमारे परम श्रद्धेय साधु-साध्वियों जी महाराज की विहार व्यवस्था एवं उनकी सुरक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण एवं अहम बात है। हमें सजगता से, गंभीरता से, साधु-संतों की सुरक्षा हेतु विहार में अपनी सेवा

प्रदान करनी है। एक गाँव से दूसरे गाँव तक साधु-संतों के साथ विहार में जाने का नियोजन हमारे सभी युवा-साथियों की ओर से होना चाहिए। ताकि हमारे साधु-साध्वीजी सुखसाता पूर्वक अपना विहार पूरा कर सकें।

हमारे परम श्रद्धेय, महाराष्ट्र प्रवर्तक पूज्य श्री कुंदनऋषि जी म. सा. को विहार में शिरूर के समीप एक छोटा सा एक्सीडेंट होने के कारण उनको पुणे में संचेती हॉस्पीटल लाया गया और फ्रैक्चर के कारण उपचार हेतु उनको हॉस्पीटल में विश्राम करने को कहा गया। उनका स्वास्थ्य ठीक है, लेकिन उन्हें विश्राम की आवश्यकता है। उनका स्वास्थ्य जल्द से जल्द अच्छा हो ऐसी हम प्रार्थना करते हैं।

आपको फिर याद दिलाना चाहता हूँ कि दिनांक 1 जनवरी 2018 को दिन जैन कॉन्फ्रेंस की युवा शाखा के राष्ट्रीय युवाध्यक्ष श्री शशिकुमारजी कर्नावट जैन 'पिन्टू' के नेतृत्व में **'नये साल का महामांगलिक एवं संघपति सम्मान समारोह'** पंडित रत्न उप-प्रवर्तक परम पूज्य श्री प्रमोदमुनि जी म., राष्ट्रसंत परम पूज्य श्री नम्र मुनि जी म., युवा केसरी परम पूज्य श्री सिद्धार्थ मुनि जी म., महाराष्ट्र प्रवर्तिनी परम पूज्य श्री ज्ञानप्रभा जी म. आदि ठाणा 40 के पावन नेश्राय में यह महामांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न होगा। आप भी इस समारोह में उपस्थित होकर अपने आपको अमृतवाणी से लाभान्वित करें यही विनम्र अनुरोध करता हूँ। परम श्रद्धेय संत-सतियाँ जी महाराज जहाँ पर भी नये वर्ष का मांगलिक देंगे आप अपनी सुविधानुसार उपस्थित होकर लाभ लेने का अवश्य प्रयास करें।

भगवान पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याण के शुभ अवसर पर मैं जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से वंदन नमन करता हूँ! ✧✧

जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाएं और हमारा दायित्व

◆ **जीवन प्रकाश योजना :** इस योजना के अंतर्गत साधर्मी जैन भाई-बहनों की उच्च शिक्षा और चिकित्सा में जैन कॉन्फ्रेंस अपना योगदान करती है। यह योगदान हमारे दानशील समाजसेवियों, श्रावक-श्राविकाओं से ही प्राप्त होता है।

◆ **जीव दया योजना :** इस योजना के अंतर्गत मूक प्राणियों की सेवा में जीव दया की भावना से योगदान दिया जाता है।

◆ **मानव सेवा योजना :** यह योजना अपने ही समाज के अभावग्रस्त परिवारों को उनके मान-सम्मान का ध्यान रखते हुए सहयोग देने की योजना है।

◆ **ज्ञान प्रकाश योजना :** स्वाध्याय मानव जीवन की ऐसी गतिविधि हैं जो हमें उभरने एवं उत्तरोत्तर आगे बढ़ने में सहयोग करता है। ज्ञान प्रकाश योजना इसी की विशिष्ट प्रस्तुति है।

◆ **वैय्यावच्च समिति :** वैय्यावच्च समिति योजना न होकर हमारे त्यागात्माओं की संयम यात्रा में सेवा और सहायता का विशिष्ट अभियान है।

आओ इन योजनाओं के महत्व को समझें और अपनी श्रमनिष्ठ आय से उदारमना होकर दान-सहयोग करें।

- प्रधान सम्पादक

अध्यक्षीय उद्गार

नए वर्ष में शुभ सोचें, शुभ करें

मोहनलाल लालचंद चोपड़ा जैन, नासिक रोड़ (महाराष्ट्र)
राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम सम्माननीय बन्धुओं, बहनों
सादर जय जिनेन्द्र!

नया वर्ष आने वाला है। २०१७ के बाद २०१८ का नया कैलेण्डर दीवारों पर लगाया जाने वाला है। यह परिवर्तन समय चक्र का परिवर्तन है, जिसे कोई रोक नहीं सकता। समय यूँ ही चलता रहा है और चलता रहेगा। इस परिक्रमा में, इस चक्र में हमें यह विचार करना है कि हमारा अपना आचरण कैसा हो? हमारी अपनी सोच कैसी हो? जिससे समाज और इंसानियत का भला हो पाए। मैं लम्बे समय से विचार करता आया हूँ कि व्यक्ति को नकारात्मक सोच से उबरकर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए। इस अनुसार हम नए वर्ष में शुभ सोचें, शुभ करें। क्योंकि विचारों के द्वारा ही एक वातावरण बनता है जो अनुकरण के रूप में आचरण बनकर सामने आता है। जिसकी जैसी सोच होती है, उसके अनुसार ही उसका व्यवहार होता है।

अपनी संस्था जैन कॉन्फ्रेंस के बारें में ही इस विचार को लें तो जैन कॉन्फ्रेंस का विशालतम अखिल भारतीय परिवार विगत एक शताब्दी से भी अधिक समय से समाज की भलाई के लिए शुभ सोचता रहा है, शुभ करता रहा है। हम सब भी इसी का अनुशरण कर रहे हैं। जिसकी जैसी शक्ति है, वह उतना कर पा रहा है। मेरे से भी जितना बनता है, मैं जरूर करता हूँ।

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं वर्तमान में जैन कॉन्फ्रेंस जैसी राष्ट्र व्यापी संस्था का राष्ट्रीय अध्यक्ष हूँ। विगत अनेक वर्षों से इस संस्था के साथ जुड़ा हुआ हूँ, अनेक पदों पर रहते हुए मैंने अपनी सेवाएं दी हैं। अनेक ऐसे अवसर भी आएं है, जब बड़े-बड़े महापुरुषों के बीच में बैठकर हमने समाज हितैषी चिन्तन किया है। वर्तमान समय में भी हम सभी सहयोगी, समाजसेवी न केवल विचार करते हैं, बल्कि यथा शक्ति सहयोग करके संस्था के द्वारा समाज के हित में निर्णय लेते हैं।

मेरे कार्यकाल के इन दो सालों में मुझे पूरे देश में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्य महात्माओं, संतों, श्रमण संघ के आचार्यश्री जी से लेकर विविध पदों पर शोभाएमान महापुरुषों-संतों से भेंट करने का, उनके दर्शन करने का, उनसे मार्गदर्शन पाने का अवसर पर मुझे प्राप्त हुआ है और जो विचार मेरे समक्ष आएं हैं, उनके आधार पर निष्कर्ष रूप से मैं कह सकता हूँ कि हमारे समग्र समाज की सोच एक समान है। हम सभी स्वस्थ मन से, स्वच्छ प्रक्रिया द्वारा समाज हित के कामों का करने का पवित्र भाव लिए हुए हैं।

मेरी अपेक्षा है कि आने वाले कैलेण्डर वर्ष में भी हम इसी सोच पर मजबूती के साथ जमे रहकर समाज हितैषी कार्यों को करने में अपनी शक्ति लगाएंगे, शुभ सोचेंगे, शुभ करेंगे। इन्हीं विचारों के साथ नए वर्ष की हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएं।

✧✧

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष,
परम गुरू भक्त श्री मोहनलालजी लालचंदजी चोपडा निवासी नासिक
के 84 वें जन्मदिवस 24 दिसम्बर के अवसर पर
जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से

हार्दिक बधाई

हमारी कामना है कि आप स्वस्थ, प्रसन्न, मंगलमय जीवन जीते हुए
संघ सेवा में लगे रहें।

निवेदक :
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

AISSJC/MEETING-MC-VI/16-18/1938/18/363 दिनांक : 14.12.2017

राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र!

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की **राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति** की सभा **गुरुवार, दिनांक 18 जनवरी 2018** को **प्रातः 11:00 बजे** से, **रिजेन्टा सैन्ट्रल डेक्कन, द्वारा रोयल ओर्चिड़ होटल्स्, नं. 36, रोयापेट्टाह हाई रोड़, रोयापेट्टाह, चेन्नई – 600 014 (तमिलनाडु)** में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल लालचंदजी चोपड़ा जैन की अध्यक्षता में आयोजित की जा रही है। आपश्री जी से सादर अनुरोध है कि सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

सभा में विचारणीय विषय सूची निम्न प्रकार से है –

विषय सूची :–

01. मंगलाचरण।

02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक–श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।

03. गत् सभा की कार्यवाही की पुष्टि।

04. सभा की तारीख से एक सप्ताह पूर्व तक प्राप्त आजीवन सदस्यता आवेदन पत्रों पर विचार–विमर्श एवं स्वीकृति प्रदान करना।

05. संविधान संशोधन समिति द्वारा प्रस्तावित संविधान पर विचार–विमर्श एवं निर्णय करके राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में संस्तुति हेतु प्रस्तुत करना।

06. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित !

भवदीय

(अशोककुमार एन. पगारिया जैन)

राष्ट्रीय महामंत्री

नोट :

1. संपूर्ण सभा में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है।

2. कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी। उस सभा में उपरोक्त विषय सूची पर ही विचार–विमर्श एवं निर्णय होगा।

3. यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो कार्यालय को 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना देवें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में हमें असमर्थता हो सकती है।

4. संशोधित संविधान की प्रति आपके पास डाक द्वारा भेजी जा रही है।

5. अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 2336 3729, 2336 5420

6. कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना तमिलनाडु प्रांतीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लानी जैन को उनके मोबाईल नंबर : 098410 30035 पर एवं तमिलनाडु प्रांतीय महामंत्री श्री महावीरचंदजी बोहरा जैन को उनके मोबाईल नंबर : 096772 47246 पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके ठहरने आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।

AISSJC/MEETING-WC-V/16-18/1939/18/363 दिनांक : 14.12.2017

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र !

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की सभा गुरुवार, दिनांक 18 जनवरी 2018 को दोपहर 1:30 बजे से, रिजेन्टा सैन्ट्रल डेक्कन, द्वारा रोयल ओर्चिड़ होटल्स्, नं. 36, रोयापेट्टाह हाई रोड़, रोयापेट्टाह, चेन्नई – 600 014 (तमिलनाडु) में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल लालचंदजी चोपड़ा जैन की अध्यक्षता में आयोजित की जा रही है। आपश्री जी से सादर अनुरोध है कि सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

सभा में विचारणीय विषय सूची निम्न प्रकार से है –

विषय सूची :–

01. मंगलाचरण ।
02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक–श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।
03. गत सभा की कार्यवाही की पुष्टि।
04. राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा द्वारा पारित संविधान पर विचार–विमर्श एवं निर्णय लेकर साधारण सभा में संस्तुति के लिए प्रस्तुत करना।
05. राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय द्वारा नवगठित "विश्वस्त मण्डल" हेतु दो सदस्यों की नियुक्ति करना।
06. एल. एण्ड डी. ओ. केस के संदर्भ में जानकारी प्रस्तुत करना।
07. जैन भवन संबंधित कोर्ट केसों की जानकारी प्रस्तुत करना।
08. जीवन प्रकाश योजना, जीव दया योजना, मानव सेवा योजना, ज्ञान प्रकाश योजना एवं वैय्यावच्च समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
09. राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
10. राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
11. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित !

भवदीय

(अशोककुमार एन. पगारिया जैन)

राष्ट्रीय महामंत्री

नोट : 1. संपूर्ण सभा में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है। 2. कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी। उस सभा में उपरोक्त विषय सूची पर ही विचार–विमर्श एवं निर्णय होगा। 3. यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो कार्यालय को 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना देवें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में हमें असमर्थता हो सकती है। 4. संशोधित संविधान की प्रति आपके पास डाक द्वारा भेजी जा रही है। 5. अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 2336 3729, 2336 5420, 6. कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना तमिलनाडु प्रांतीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लानी जैन को उनके मोबाईल नंबर : 098410 30035 पर एवं तमिलनाडु प्रांतीय महामंत्री श्री महावीरचंदजी बोहरा जैन को उनके मोबाईल नंबर : 096772 47246 पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके ठहरने आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।

शिव संदेश...

"मुक्ति का कारण संवर साधना"

- युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म. सा.

भगवान महावीर की साधना की शुरुआत सम्यकदर्शन से होती है। सम्यकदर्शन अर्थात सत्य का बोध, सत्य पर श्रद्धा, सत्य में रमण। सत्य को भीतर आत्मसात करना है। सत्य अर्थात स्वः को जानना। आत्मा का गहन अनुभव करना।

हम भगवान महावीर के सच्चे साधक बने। कैसे प्रभू महावीर ने साढ़े बारह वर्श तक सत्य का शोध किया। पर को छोड़कर अर्थात संसार की असारता का त्याग करते हुए अपने भीतर रमण करते रहे। जबकि **हम सभी देह के प्रति कितने आसक्त है। इन्द्रियों के सुख के लिए कितने लालायित रहते है। मनोरंजन के लिए कितना समय व्यतीत करते है।** आत्मरंजन केवल मात्र एक या दो घंटे तक ही होता है। मनोरंजन में बीती प्रत्येक श्वास कर्म बन्धन का कारण है। इन्द्रियों की आसक्ति बार-बार संसार परिभ्रमण करवा रही है। यह आस्रव का निमित्त बन रही है।

आस्रव अर्थात मन, वचन, काया के प्रति आसक्त होकर देह का पोषण करना। अनंत काल से हम यही कर रहे है। अब आस्रव से हटकर संवर में प्रवेश करे संवर अर्थात स्वः में रमण कैसे करे? मन, वचन, काया का गोपन करते हुए स्वः में लीन हो जाना संवर से निर्जरा की ओर ले जाता है।

सम्यक पुरुषार्थ यही है कि नवीन कर्म का बन्धन न हो, संसार का कारण मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, अशुभ योग पंचेन्द्रियो पर संयम न रखना, उनमें सुख ढूंढ़ना, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील परिग्रह आदि पापों में सलग्न रहना एवं मन, वचन, काया को वश में न रखना। **अयतना और अविवेक से कार्य करने से संसार बढ़ता है और चार गति चौरासी लाख जीव योनी में जीव भ्रमण करता है। अतः संसार से मुक्त होने के लिए आस्रव का त्याग करना होगा।**

कर्म बंधन को रोकने के लिए भगवान ने संवर का मार्ग दिखाया। मुक्ति का कारण है संवर। सम्यक्त्व अर्थात आत्मा पर श्रद्धा। व्रत, प्रत्याख्यान, जागरुकता, अकषाय, आत्म शुद्धि की साधना, पाँच इन्द्रियों पर संयम, छः काय के जीवो की रक्षा और प्रत्येक कार्य विवेक से करने से संवर की साधना होती है। संवर से नये कर्म के बंधन रुकते है। उदय में आये कर्म को क्षय करने का पुरुषार्थ स्वरुप की साधना से होता है। **एक सामान्य व्यक्ति दिन भर में एक घंटा धर्म ध्यान करके तृप्त हो जाता है और शेष 23 घंटे आर्त-रौद्र ध्यान में तल्लीन रहकर कर्म बंधन करता है।**

अरिहंत प्रभु की कृपा से दृष्टि बदली तो ज्ञात हुआ कि प्रतिपल कर्म क्षय किये जा सकते है। जिस साधक को आत्म दृष्टि प्राप्त हो गयी वह भेद विज्ञान के द्वारा शरीर व आत्मा में भेद कर आत्म ध्यान में लीन रहता है। वह साधक प्रतिपल ध्यान आत्मा पर रख कर **24 घंटे संवर करता हुआ धर्म ध्यान से शुक्ल ध्यान की ओर बढ़ता है। चिंतन आत्मा का, ध्यान आत्मा का, आत्मा की साक्षी में आत्म रमण करते हुए, वीतरागता की ओर बढ़े।**

आओ! वर्ष 2017 पूर्णाहूति की ओर बढ़ रहा है। आत्म ज्ञान, आत्म ध्यान के द्वारा हम इस वर्ष का लेखा जोखा करे एवं आगामी वर्ष के लिए जीवन में आनंद शांति व ज्ञान भीतर से प्रकट हो ऐसा संकल्प करे।

✧✧

कैसे करें इस कैलेन्डर वर्ष का स्वागत

- श्रमण संघीय युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा.

2017 वर्ष का अंतिम दिवस 31 दिसम्बर की रात हम आने वाले वर्ष का स्वागत करते हैं। जश्न मनाते हैं, एक-दूसरे को नववर्ष की बधाइयाँ देते हैं। यूं तो जीवन का हर क्षण नया होता है, प्रेरणा देने वाला होता है। प्रश्न है कि हम किसे विदाई दें, किसका स्वागत करें? हम प्रतिशोध की भावना का त्याग करें, अन्याय का प्रतिकार करें और निषेधात्मक भावों का विसर्जन करें।

नववर्ष की पूर्वसंध्या पर हम चिंतन करें - हमारे मन के किसी कोने में किसी के प्रति वैर-विरोध, द्वेष की चिंगारी तो नहीं जल रही है? कहीं ऐसा न हो वह चिंगारी किसी और को भस्म करे या न करे अपने को ही न जला दे। चिंतन के द्वारा हम अपना संसार बनाते व उजाड़ते हैं। जब व्यक्ति निषेधात्मक भावों से घिर जाता है, तब मानना चाहिए वह अपने जीवन में असफलता को आमंत्रण दे रहा है। नकारात्मक चिंतन करने वाले व्यक्ति को प्रत्येक पदार्थ में दोष दिखाई देता है। जबकि जीवन में सफलता तभी मिलती है। जब आदमी निषेधात्मक भावों का विसर्जन कर विधेयात्मकं भावों का अर्जन करे।

भगवान महावीर ने कहा- "इच्छाएं आकाश के समान अनन्त है। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा व्यक्ति की सामान्य आवश्यकता है। लेकिन आवश्यकता और आकांक्षा दोनों भिन्न हैं, आवश्यकता की सीमा है और आकांक्षा सीमातीत। व्यक्ति के भीतर जब इच्छा की लालसा बढ़ती है, तब वह सोचता है दुनिया की सारी सम्पत्ति उसे मिल जाए। बहुत कुछ पाकर भी उसे लगता है अभी कुछ नहीं मिला। असीम लालसा से वह कुछ पाये या न पाये, किंतु आन्तरिक सुख-शांति वह खोता अवश्य है। तृष्णा की आग प्राणी को भीतर ही भीतर जला देती है। हिंसा के वातावरण से हर चेहरा भयभीत है। भय एवं हिंसा का गहरा सम्बंध है। हिंसा के प्रशिक्षण के अनेक केन्द्र खुले हुए हैं, अगर हिंसा की बजाय अहिंसा के ट्रेनिंग केन्द्र खुल जाएँ तो विश्व में आतंक की समस्या का समाधान हो सकता है। अहिंसक बनने के लिए अभय, मैत्री व करुणा की धारा प्रवाहित करनी होगी।

नववर्ष का स्वागत हम अनेकान्तवादी विचारों, अभय की साधना, अहिंसा की अवधारणा से करे। एकता, समन्वय, सामंजस्य, सहिष्णुता का विस्तार करें। जैन दर्शन का मौलिक दर्शन है "अनेकान्त"। अनेकान्त के द्वारा विश्व की तमाम समस्या का समाधान हो सकता है। जहाँ आग्रह की वृत्ति है वहाँ समस्या खड़ी होती है। **जबकि अनेकान्त को समझने वाला व्यक्ति अपने जीवन में अनाग्रह को स्थान देता है। हम केवल अपनी सोच को ही सही नहीं मानें, दूसरों के विचारों के भी आदर दें। जहाँ केवल अपने हित व बात का आग्रह होता है वहाँ व्यक्ति समाधान पा नहीं सकता। जीवन विकास में सहिष्णुता का होना अति आवश्यक है। जीवन को शांति व आनंदमय रुप से तभी जो सकते हैं जब हम हर परिस्थिति में सामंजस्य बैठा सके।** समन्वय, सामंजस्य एवं सहिष्णुता इन तीन गुणों को हम आत्मसात् कर लें तो हर स्थिति को सरलता से पार कर सकते हैं। अपरिग्रह और संयम का पोषण करें और विसर्जन की चेतना को जागृत करें।

हम अतीत का प्रतिक्रमण कर भविष्य को

नए चिंतन, लक्ष्य, आत्मविश्वास के साथ जीने का संकल्प करें। उस दिन न केवल पुराने वस्त्र, पुराने कलेण्डर बदलें, अपितु बदल दें उन पुरानी मिथ्या मान्यताओं को, जो जीवन विकास में अवरोध बनी हुई हैं। व्यक्ति चिंतन करता है कि आगामी वर्ष सुखमय, शांतिमय व्यतीत हो। वह नयी योजना बनाता है। परिकल्पना संजोता ताकि उसे भविष्य में आने वाली कठिनाइयों, संघर्षों, अवरोधों में उसका मार्ग प्रशस्त हो सके।

भगवान महावीर के इस सूत्र **'खणं जाणहि पंडिए'** को आत्मसात् करें। हम हर क्षण को नया मानकर स्व-पर के प्रति मंगल भावना से भावित हो जिन्दगी की सुखद शुरुआत करें। दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए उन्होंने समय की मुल्यवत्ता को पहचान कर अपना जीवन जीया। युगप्रधान आचार्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. ने **'समयं गोयम मा पमायए'** इस सूत्र को अक्षरक्षः आत्मसात् कर व्यस्त जीवन जीते हुए अगणित कार्यों, साहित्य एवं साहित्यकारों का सृजन कर दुनिया के सामने एक मिसाल कायम की। ध्यान के क्षेत्र में आपका योगदान तो शब्दातीत है।

आज का युग समय प्रबंधन का है। समय का नियोजन कर सार्थकता की दिशा में कदम बढ़ाएँ तो नववर्ष का हर क्षण, हर पल नयी क्रांति लेकर आएगा। समय के साथ हम व्यवस्था बदलें किन्तु अपने आदर्शों को नहीं। **आधुनिकता के नाम पर हम अपनी भारतीय संस्कृति, संस्कारों को ताक में न रखकर उन्हें मूल्यवत्ता प्रदान करे। तभी हम नववर्ष का वास्तविक स्वागत कर सकें।**

नए वर्ष में संघ-संगठन के हेतु प्रयास करें। श्रमण संघ को अपने सर्वोच्च स्थान प्रदान करें। संवाद और समन्वय का वातावरण निर्मित करते रहें। ✧✧

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री सागरजी कुंदनमलजी सांखला जैन वर्ष 2018 की कैलेण्डर प्रकाशन समिति के चेयरमैन बनें

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की ओर से आग्रह करने पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री सागरजी कुंदनमलजी सांखला जैन ने वर्ष 2018 के कैलेण्डर प्रकाशन समिति का चेयरमैन बनने पर अपनी सहमति व्यक्त की है। यह युवा कार्यकर्ता अनेक वर्षों से समाज एवम् व्यापारिक क्षेत्र में विशेष योगदान से अपनी पहचान तेजी से बना रहा है। पुणे के प्रसिद्ध क्षेत्र भोसरी श्रीसंघ के कार्याध्यक्ष के रूप में वहां के व्यापारी संघ के संस्थापक के रूप में आपकी सेवाएं निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

पिंपरी चिंचवड़ क्षेत्र में भी आपकी युवकोचित्त जोशीली सेवाओं से समाज में भारी प्रशंसा एवम् अनुमोदना है। अखिल भारतीय स्तर पर प्रकाशित होने वाले जैन कॉन्फ्रेंस के कैलेण्डर प्रकाशन चेयरमैन के रूप में आपने जो गंभीर दायित्व निभाने का संकल्प लिया है, उसके लिए सर्वत्र आपकी प्रशंसा की जा रही है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई, शुभकामनाएं।

- प्रधान सम्पादक

योग ध्यान और प्रभु पार्श्वनाथ

- वाचनाचार्य उपाध्याय पूज्य श्री विशाल मुनि जी म. सा.

योगेश्वर भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का ध्यान योग व योगासन के क्षेत्र में महान योगदान है। श्री पार्श्वनाथ-तंत्रानुष्ठान के तो महान अधिष्ठाता ही रहे हैं। अतः श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर **"आसनों से मुक्त रोग मुक्ति"** विषय पर प्रस्तुत यह आलेख योग विद्या विशारदों को समर्पित है। यह लेख आपको अनेक प्रश्नों के उत्तर सहज ही दे देगा, इस विश्वास के साथ।

1. आयुवर्द्धक है पद्मासनः साधना क्षेत्र में सर्वाधिक आसन पद्मासन एक लोकप्रिय आसन है। इस आसन के करने से **पाँवों का आकार कमल जैसा होने के कारण इसको 'कमलासन' भी कहते हैं।**

विधिः सर्वप्रथम जमीन पर बैठकर टांगे सीधी करके दोनों पांव मिला कर रखें उसके पश्चात् दाहिना पैर और बायां पैर दाहिनी जंघा पर इस प्रकार रखें कि दोनों पैरों की एड़ियाँ नाभि दोनों और पेट से सट जाय। हाथों को घुटनों पर रखें। कमर, छाती, सिर आदि सारा भाग सीधा और तना हुआ रखें। दोनों पांवों के घुटने जमीन से मिले हुए रहने चाहिए। दृष्टि साधारण बंद रहनी चाहिए। इस आसन को करते समय 'प्राणायाम' की विधि का पूरा ध्यान रखें, इसे योग्य गुरु से सीखे। पद्मासन को शुरु में एक मिनट से क्रमशः बढ़ा कर घंटों तक कर सकते हैं।

लाभः चंचल मन को स्थिर करने के लिए यह आसन बहुत ही श्रेष्ठ और लाभदायक है। मानसिक कार्य करने वालों, गहन चिंतन करने वालों तथा विद्यार्थियों के लिए यह आसन रामबाण का काम करता है। वीर्य रक्षा के लिए तो यह आसन बेजोड़ है। वात, पित्त, कफ आदि दोषों का नाश करता है। सुख-शांति और शक्ति को बढ़ाता है। आयुष्यवर्द्धक हैं, स्वप्नदोष एवं प्रमेह के रोगों का नाश करता है। स्मरण शक्ति बढ़ाता है। पेट के सारे रोग दूर हो जाते हैं, माताओं के गर्भाशय संबधी समस्त दोषों को दूर करता है।

यम नियम पूर्वक पद्मासन में अधिक समय बैठने से प्राण व अपान की एकता होकर, कुंडलिनी जागृत होती है। घेरंड शाण्डिल्य तथा अन्य कई ऋषियों ने इस आसन की बहुत महिमा बतायी है। **ध्यान लगाने के लिए तो यह आसन बहुत श्रेष्ठ है और बहुत ही लाभप्रद है। इस आसन को स्त्री पुरुष सभी कर सकते हैं।**

- **अलौकिक शक्ति देता है सिद्धासनः** सिद्धि, लब्धि जैसी महान अलौकिक शक्तियों को देने वाला होने के कारण इस आसन को **"सिद्धासन"** कहते हैं। **यमों में जैसे ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ है, नियमों में जैसे शौच है, ठीक इसी प्रकार आसनों में सिद्धासन सर्वश्रेष्ठ है।**

विधिः जमीन पर सीधे बैठ कर बाएं पैर की एड़ी को अंडकोष और गुदा के मध्य भाग में दबा कर लगायें, और बायें पैर की एड़ी को इंद्रिय तथा नाभि के मध्य स्थान पर बाएं पैर की एड़ी की सीध में दबाकर रखे। कमर, पीठ, छाती, गर्दन, सिर मतलब यह कि सारा शरीर सीधा रखना चाहिए। हाथों को घुटनों पर अथवा पैरों के पंजों पर रखा जा सकता है। दृष्टि न खुली हो न बिल्कुल बंद ही हो, साधारण आँखें बंद करके अपने अंदर झाँकने का अभ्यास करो। सरलता से जितना भी बैठ सकें उतना ही बैठे, क्रमशः समय को बढ़ाते रहें। पर्याप्त समय बैठने का अभ्यास होने पर योग्य गुरु से प्रणायाम की विधि को सीख कर उसका

अभ्यास करें।

लाभः इस आसन का विधि पूर्वक अभ्यास करने से मन की एकाग्रता होती है। विचार पवित्र बनते हैं, भोग विलास की तरफ जाने से मनुष्य बचता है। 72 हजार नाड़ियों का मैल इस आसन के अभ्यास से दूर होता है। वीर्य की रक्षा होती है, वीर्य-वाहिनी नाड़ियों को यह आसन मजबूत बनाता है जिससे वीर्य स्थिर रहता है, स्वप्नदोष के रोगियों को यह आसन अवश्य करना चाहिये बहुत लाभ होता है। योगी जन इस आसन द्वारा वीर्य की रक्षा करके प्राणायाम द्वारा उसे मस्तक की ओर ले जाते हैं, जिससे वीर्य ओज तथा मेघा पूर्ण शक्ति में परिणत होकर दिव्यता और मानसिक शक्ति पूर्णरुप से प्राप्त होती है। कुंडलिनी जागृत करने की लक्ष्य सिद्धि के लिए यह आसन प्रथम सिद्धि है। सिद्धासन में बैठ कर जो पढ़ा जाता है, वह अच्छी तरह याद रहता है। विद्यार्थियों के लिए यह आसन विशेष लाभप्रद है इससे पाचन शक्ति तेज होती है। शरीर शक्तिशाली बनता है, दिमाग स्थिर बनता है जिससे स्मरण शक्ति बढ़ती है, ज्ञान का प्रकाश होता है।

- **मृत्युंजयी बनाता है सर्वांगासनः**

जमीन पर लेट कर संपूर्ण शरीर को ऊपर उठाने के कारण इस आसन को सर्वांगासन कहते हैं। **विधिः** सर्वप्रथम जमीन पर चित्त लेट कर दोनों पैर तथा सारा शरीर बिल्कुल सीधा रखें। श्वास निकल कर धीरे-धीरे पैरों को सीधा रखते हुए ऊपर उठावें। प्रथम कमर तक पैर उठावें उसके पश्चात् पीठ का जो भाग जमीन पर हो उसे उठा कर दोनों हाथों से कमर को पकड़ कर कंधे से पैरों तक सारे शरीर का सीधा रखें। पूर्ण अभ्यास हो जाने पर दोनों हाथों के सहारे को छोड़ कर हाथों को जमीन पर सीधा रखें, दृष्टि दोनों पैरों के मध्य में रखें शरीर का सारा आधार सिर और कंधे पर ही रहना चाहिये। ठीक तरह से अभ्यास होने पर ऊपर उठायी टांगों को आगे तथा पीछे की तरफ सीधा जमीन पर लगाने से 'हेलोर्ध्व सर्वांगासन' और एक टांग के घुटने को मोड़कर उससे कान को छू जाने से 'कर्णपीठतोर्ध्व सर्वांगासन' होता है। दोनों टाँगों को मोड़कर 'पद्मासन' की स्थिति में लाने से 'ऊर्ध्वसर्वांगासन' हो जाता है। इस तरह अन्य कई प्रकार हैं।

लाभः हठयोग शास्त्रकार ने लिखा है - तालु (मुख के अंदर जो ऊपर का भाग है) के मूल में आया हुआ चंद्र में से झरता चंद्रामृत, उसे नाभि में रहा हुआ सूर्य, प्रतिक्षण ग्रसा करता है, जिससे मनुष्य धीरे-धीरे वृद्ध होता जाता है। उस चंद्रामृत के रक्षार्थ (चंद्रामृत का पोषण शरीर को ही मिले) इस हेतु जिससे सूर्य की मुख की वंचना हो ऐसी मुद्रारुपी आसन होता है।

ये आसन नित्य अभ्यास करने से जठराग्नि बढ़ाने वाला है। रुचि अनुसार खुराक बढ़ानी चाहिए। शनैःशनैः इस आसन का समय बढ़ाने से, वलित, यानी ढीली चमड़ी का होना और पलित (बाल पक कर झरने लगाना) दूर हो जाता है ओर प्रतिदिन एक प्रहर मात्र अभ्यास करने से साधु मृत्यु को भी जीत लेता है। **रसायन रुपी इस आसन अभ्यास के अमृतपान से शरीर सामर्थ्य में वृद्धि होती है। इन दोषों का शमन और वीर्य की गति ऊर्ध्व होकर अन्तःकरण की शुद्धि होकर तथा शक्ति बढ़ते हुए चिर यौवन की प्राप्ति होकर आयु बढ़ती है।**

- **थाइराइड नामक** अंत-ग्रंथि की क्षमता इस आसन से बढ़ती है। लीवर और प्लीहा के दोष दूर हो जाते हैं। मुख पर से खील और अन्य दाग दूर होकर चेहरा सुर्ख, तेजस्वी बनता है। होजरा और नीचे उतरा आंतरणा अपने मूल स्थान पर स्थिर बनता है। रुषातन ग्रंथि पर यह आसन सुंदर असर करता है। स्वप्नदोष दूर होता है।

मानसिक श्रम करने वाले वकील, डॉक्टर, साहित्यकार एवं विद्यार्थियों को यह आसन अवश्य करना चाहिये। मंदाग्नि, अजीर्ण, कब्ज, अर्श, थाइराइड का विकास, थोड़े दिनों का एमेंडी- साइटिस ओर साधारण गाँठ, अंग विकार, अकाल वृद्धावस्था, दमा, कंपन, चमड़ी के रोग, खून के दोष, स्त्रियों के मासिक धर्म की अनियमितता मासिक धर्म के समय दर्द होना, मासिक धर्म का न होना अधिक मासिक होना आदि रोगों में यह आसन लाभ पहुँचाता है।

थाइराइड के अति विकास वाले खून, कमजोर हृदय वाले और अति मैदा वाले व्यक्तियों को किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेकर यह आसन करना चाहिए। इस आसन से नेत्र और मस्तिष्क की शक्तियाँ बढ़ती है। सिर तथा नेत्रों के रोग दूर हो जाते हैं। स्त्रियाँ यह आसन कर सकती है।

रोगों में आसन के लाभ

- **पेट की बीमारियों में :** उत्तान-पादासन पवन-मुक्तासन, वज्रासन योगमुद्रासन, मत्स्यासन।
- **सिर की बीमारियों में :** सर्वांगासन, शीर्षासन, चन्द्रासन आदि।
- **मधुमेह में:** पश्चिमोत्तनासन, नौकासन, वज्रासन, योग मुद्रासन आदि।
- **गले के रोगों में:** सुप्तवज्रासन, शीर्षासन, भुजंगासन आदि
- **गाठिया बात में:** पवन मुक्तासन, पद्मासन, सुप्तवज्रासन, मत्स्यासन, उष्ट्रासन।
- **नाभि रोगों में :** धनुरासन, नाभिआसन, भुजंगासन।
- **गर्भाशय के रोगों में:** उत्तान-पादासन, भुजंगासन, सर्वांगासन, ताड़ासन।
- **कमर के रोगों में :** हलासन, चक्रासन, धनुरासन, भुजंगासन।
- **फुफ्फुस रोगों में:** वज्रासन, मत्स्यासन, सर्वांग आसन।
- **गुदा बवासीर, भगन्दर में:** उत्तान-पादासन, सर्वांगासन, जानुशिरासन, यानासन।
- **अनिद्रा में :** शीर्षासन, सर्वांग आसन, हलासन, योग मुद्रासन।
- **दमा में:** सुप्तवज्रासन, मत्स्यासन, भुजंगासन।
- **गैस के रोगों में:** पवनमुक्तासन, जानुशिरासन, खगासन, योगमुद्रासन, वज्रासन।
- **जुकाम में:** सर्वांग आसन, हलासन, शीर्षासन आदि। **ये है श्री पार्श्व योग सम्मुचय जो आदिकाल से जैन धर्मावलम्बी साधक प्रयोग में लाते रहे हैं।** ✧✧

सुख और समृद्धि के लिए फैंगशुई

पूर्व दिशा या अग्नि कोण में हरियाली वाले पेड़ों के चित्र लगाएं। यदि यह सम्भव नहीं हो तो हरे रंग का बल्व जला सकते हैं।

- ❖ दक्षिण दिशा में लाल बल्व जलाकर शुभ ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है।
- ❖ नैऋत्य कोण में शुष्क, ऊँचे चोटीदार पहाड़ों का चित्र लगाने से दोष का उपचार होता है।
- ❖ पश्चिम दिशा में चमकीली घड़ी या पाँच छड़ वाली "सफेद पवन घण्टी" लगाना शुभ रहता है।
- ❖ वायव्य कोण में पाँच छड़ी वाली सुनहरी या पीली विंड चाइम लगाने से अनुकूलता प्राप्त होती है।
- ❖ उत्तर दिशा में आकर्षक फव्वारा, मछली घर रखने में शुभता आती है। यदि आप फव्वारा घर में नहीं रखना चाहें तो इनके चित्र भी लगा सकते हैं। इससे शुभता प्राप्त होती है।

उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में पानी का भरा पात्र रखने से लाभ होता है। ✧✧

संत, लेखक, विचारक निंदनीय जीवन नहीं जी सकते

- उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य श्री सुमन मुनि जी म. सा.

अनंत करुणा निधान भगवान पार्श्वनाथ के अनन्य भक्त महान टीकाकार आचार्य श्री अभयदेवसूरि पाटन पधारे वहां 'करडी हटी' नामक बस्ती में विराजे। वहां रहते हुए अभयदेव सूरि ने **स्थानांग प्रभूति नौ अंग शास्त्रों पर नौ वृत्तियों की रचना की। वृत्तियों की रचना करते समय उन्हें आगमसूत्रों के अर्थ व व्याख्या के संबंध में जहां कहीं भी शंका उत्पन्न होती, वहां महाविदेह क्षेत्र में विराजमान जया, विजया, जयंती नामक देवियाँ आचार्य अभयदेव सूरि के संदेहों का निवारण कर देती थीं।**

'प्रभावक चरित्र' के अनुसार कठोर परिश्रम, रात्रि जागरण और लंबे समय तक आयंबिल व्रत के परिणामस्वरुप अभयदेव सूरि रक्तदोष से ग्रस्त हो गए। उनसे द्वेष और ईर्ष्या रखने वाले लोगों ने चारों ओर इस प्रकार का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया कि- **अभयदेव सूरि ने नवांगों की वृत्तियों में विपरीत अर्थ की व्याख्या की है, उनके इस अपराध के कारण जिनशासन देवों ने उनके अंग प्रत्यंग में कुष्ठ रोग उत्पन्न कर दिया है।** इस प्रकार के लोकापवाद से चिंतित हो अभयदेव सूरि ने रात्रि समय शासन रक्षक धरणेन्द्र देव का स्मरण किया। उसी रात निद्रावस्था में अभयदेव सूरि ने स्वप्न में देखा कि - एक भीषण काला नाग अपनी लपलपाती जिह्वा से उनके अंग प्रत्यंगों को चाट रहा है। **जागृत होने पर उन्हें आभास हुआ कि अब उनकी आयुष्य का अंतिम समय आ चुका है। अतः संथारा अंगीकार कर लेना चाहिए।** किन्तु द्वितीय रात्रि के समय उन्होंने स्वप्न में देखा कि स्वयं धरणेन्द्र उनके सम्मुख उपस्थित होकर कहा। **"मैं धरणेन्द्र हूँ ! मैंने आपके इस कुष्ठ रोग को अपनी जिव्हा से चाट कर नष्ट कर दिया है। अब आप पूर्णतः स्वस्थ हैं।" धरणेन्द्र की बात सुनकर अभयदेव सूरि ने कहा- "न तो मुझे मृत्यु से कोई भय है, और न ही घोरातिघोर रोग से, लेकिन लोगों ने जो यह झूठा अपवाद फैला दिया है कि मैंने वृत्तियों की जिनवाणी के विपरीत व्याख्या है, इसलिए शासनाधिष्ठायक देवों ने क्रुद्ध हो कर मेरे शरीर में रोग उत्पन्न कर दिया है। इस प्रकार के झूठे अपवाद के कारण मुझे केवल इस बात की चिंता है कि यदि इस रोग से प्रपीड़ित अवस्था में मेरा देहावसान हो गया तो लोक में जिनशासन की प्रतिष्ठा व प्रभावना को धक्का लगेगा।"**

इस पर धरणेन्द्र ने कहा- 'तुम्हें इस प्रकार अधीर नहीं होना चाहिए। आपने जो स्थानांगादि नौ अंग शास्त्रों की वृत्तियों की रचना की है वह युग-युगान्तर तक जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाती रहेगी।'

वास्तव में आचार्य अभयदेव सूरि उच्चकोटि के महान निमित्तज्ञ व भविष्य कथन में अद्वितीय थे। इस उल्लेखानुसार आचार्य अभयदेव सूरि विहार क्रम से 'पाल्यपद्रुपुर' नामक ग्राम में पहुंचे। इस ग्राम के रहने वाले श्रावक अभयदेव सूरि के परम भक्त थे। उन श्रावकों का विदेशों में दूर-दूर समुद्रपार तक व्यापार चलता था। जिस समय अभयदेव सूरि उस नगर में पधारे, उससे पहले ही उन श्रावकों के जहाज व्यापारार्थ समुद्र पार के देशों को भेज दिए गए थे। जब वे जहाज विदेशों से माल लेकर भारत की ओर लौट रहे थे, उस समय यह समाचार मिला कि वे जहाज समुद्र में डूब गए हैं। इस प्रकार की बात

सुनकर श्रावकों को बड़ा दुःख हुआ। पर्याप्त विलंब के पश्चात् वे आचार्यश्री की सेवा में वंदनार्थ उपस्थित हुए। देरी का कारण पूछने पर उन श्रावकों ने जहाज डूबने की बात बताई। श्रावकों की बात सुनकर कुछ क्षण ध्यानस्थ रहने के पश्चात् अभयदेव सूरि ने कहा - **इस विषय में तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, तुम्हारे जहाज सुरक्षित हैं और शीघ्र ही यहाँ आने वाले हैं। दूसरे ही दिन व्यापारियों के सेवक ने आकर सूचित किया कि जहाज सुरक्षित आ गए हैं तो उन श्रावकों के हर्ष का पारावार न रहा।**

उन्होंने अभयदेव सुरि के समक्ष जाकर अपना अटल निश्चय सुनाया- 'आचार्यदेव! हमारे इन जहाजों द्वारा लाए गए क्रयाणक से हम सबको जितना लाभ होगा, उसका आधा भाग हम आप द्वारा निर्मित सिद्धांतों, वृत्तियों और साहित्य के लिखवाने में व्यय करेंगे।'

अभयदेव सूरि ने कहा - 'यह तो तुम्हारे लिए मुक्ति-गमन में सहायक होगा। अच्छे कार्यों में तो सदा तत्पर रहना चाहिए।'

खतरगच्छ वृहद् गुर्वावली के उल्लेखानुसार अभयदेव सूरि द्वारा प्रतिबोधित दो श्रावकों ने श्रावक के 12 व्रतों के पालन और समाधिपूर्वक मरण के कारण स्वर्गगति प्राप्त की। दोनों देवों ने सीमन्धर और युगमन्धर स्वामी को वंदन करने के पश्चात् उनसे प्रश्न किया कि - **अभयदेव सूरि कौन से भव से मुक्ति प्राप्त करेंगे?** उत्तर मिला इसी भव में अभयदेव सूरि सिद्ध-बद्ध मुक्त हो जाएंगे।

प्रभु के मुख से यह उत्तर सुनकर दोनों देव बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने अभयदेव सूरि के समक्ष उपस्थित होकर उन्हें ये सुसंवाद सुनाया और पुनः देवलोक की ओर लौटते हुए एक गाथा का उच्चारण किया जो गुर्णावली में इस प्रकार हैं:-

'भणियं तित्थयेरेहिं, महाविदेहे भवंमि तइयंमि!
तुम्हाण चेव गुरवो, मुत्तिं सिग्घं गमिस्संति।।'

ये एक स्वाध्याय करती हुई एक साध्वी ने इन सब उल्लेखों से प्रकट होता है कि अभयेदव सूरि अति मृदुमंजुल व जनमनाकर्षक प्रकृति के अप्रितम विद्वान लोकप्रिय आचार्य थे। आ. अभयेदव सूरि द्वारा जो विपुल नवअंगों साहित्यों का निर्माण किया गया है, उसका संक्षिप्त रुप में परिचय इस प्रकार है:-

1. स्थानांगवृत्ति 2. समवांयांग वृत्ति 3. व्याख्या प्रज्ञप्ति वृत्ति 4. ज्ञाताधर्म कथांग वृति 5. उपासक दशांक वृत्ति 6. अन्तकृदशांग वृत्ति 7. अनुत्तरोपपात्तिक वृत्ति 8. प्रश्न व्याकरण वृत्ति 9. विपाक वृत्ति।

ये समस्त वृत्तियाँ आज आगम साहित्य पर गहन टीकाएं हैं। ✧✧

मोक्ष क्या है? मुक्ति का महत्व क्या है ?

- संपूर्ण कर्मों की पूर्ण निर्जरा होना ही मोक्ष है।

- मोक्ष का सुख ही जीवन का वास्तविक सुख है।

- मोक्ष स्थित सभी जीवों को एक समान सुख होता है, उनके सुख में अंतर नहीं हैं।

- एक जीव के आत्म प्रदेश में दूसरे अनंत जीवों के आत्म प्रदेश दबे हुए हैं, मिले हुए हैं।

- मोक्ष जाने वाले मनुष्यों की त्रटजु गति होती है, केवल एक समय में मोक्ष पहुँच जाती है।

- मोक्ष में उत्पन्न होने का विरह जघन्य एक समय एवं उत्कृष्ट छः माह का है।

- लोक में मोक्ष ही एक ऐसा स्थान है, जहाँ जीवों की संख्या निरंतर बढ़ती है।

- जीव मोक्ष में निष्कम्प अवस्था में सर्वकाल निवास करता है। ✧✧

चतुर्याम धर्म प्रणेता भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी

- प्रवर्तक पूज्य डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी म. सा.

अध्यात्म जगत में दो शब्द बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। ये दो शब्द हैं **श्रेयश और प्रेयश** ये दो शब्द मात्र नहीं हैं, दो आचार हैं, दो लक्ष्य हैं।

श्रेयश पारलौकिक और आध्यात्मिक सुख है। क्योंकि मनुष्य के जीवन का उद्देश्य ऐश्वर्य भोग नहीं है। उसे जिस आध्यात्मिक सुख को अंतिम समय में प्राप्त करना है, उसी को श्रेयश कहते हैं। वहीं श्रेय का अर्थ है सांसारिक सुख और ऐश्वर्य भोग। जो प्रिय लगे, जो हमें संसार से बांधे।

इस संसार की समस्त कामनाएं, ऐषणाएं, वासनाएं आदि। मनुष्य जिसे संसार सुख के लिए प्राप्त करे। श्रेयश विराट का प्रत्यक्षीकरण है और श्रेयश स्व का निजीकरण है जैसे उपासना और आराधना। उपासना व्यक्तिगत पूजा है, आराधना सार्वलौकिक पूजा है। इसलिए प्रेयस व्यक्तिगत कामना की पूर्ति है, अनंत इच्छाओं की पूर्ति का प्रयास है और श्रेयस संपूर्ण मानवीय मूल्यों के लोक मंगलकारी विचारों को समझने का प्रयास है। मनुष्य जब तक कामनाओं में बंधा रहता है, तब तक प्रेयस के परिवेश में रहता है और ज्यों ही उसकी कामनाएं व्यापक बन जाती हैं, व्यष्टि से समष्टि की ओर चली जाती हैं वह श्रेयस बन जाती है।

भगवान पार्श्वनाथ ने इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर चतुर्याम धर्म का निरुपण किया। प्रभु ने अपने शासन में सत्य, अहिंसा अस्तेय, अपरिग्रह को तो प्राथमिकता दी। मगर ब्रह्मचर्य इन्हीं में समाहित माना। प्रभु के शासन काल में तत्कालीन समाज नैतिक नियमों से बंधा समाज था, अतः ब्रह्मचर्य उच्च मूल्यों के संरक्षण का मानक मान कर प्रत्येक साधक स्मरण में रखता था।

वस्तुतः शीलाचार, नैतिक रुप से परिपक्व साधक के लिए स्वभावगत आचरण है। यहाँ स्व-पर के प्रति समदृष्टि महत्व रखती है। जो भी साधक लोक मंगल का प्रणेता है, वो स्वांत सुखाय ही परम नैतिकता का आराधक होता है। प्रभु पार्श्वनाथ का चिंतन इसी युगीन विश्वास पर आधारित था।

मेरी समझ में प्रत्येक मनुष्य जब कोई कृति करता हैं, पुस्तक लिखता हैं, स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल बनवाता है। पहले वह अपने सुख के लिए उसका निर्माण करता है, लेकिन जब उस निर्माण कार्य से जनकल्याण होने लगता है, तो वह उसका अपना सुख नहीं रहता। वह जनमानस का सुख बन जाता है **जब तक वह किसी व्यक्ति के हित के लिए था, तब तक वह प्रेयस था, लेकिन ज्यों ही यह जनकल्याण के लिए समर्पित हो गया तो यह श्रेयस बन गया।** मनुष्य कृति करता है अपने लिए, लेकिन जब वह कृति लोक कल्याणकारी बन जाती है तो वह किसी व्यक्ति की नहीं रहती। **कृति हमेशा जीवित रहती है। मनुष्य चला जाता है, लेकिन उसकी कीर्ति हमेशा जीवित रहती है। यह लोकमंगलकारी भाव है। यही श्रेयस है।**

वैसे भी जैन धर्म-दर्शन का लोकमंगलकारी भाव यहीं है कि -**"हम स्वयं को ऐसा बनाएं कि किसी भी अन्य को कष्ट न हो।"**

जब यही भाव आचरण बन जाता है तो समस्त अच्छाईयाँ जीवन में समाहित हो जाती है। व्यक्ति मानवीय मूल्यों से समृद्ध हो जाता है। **ब्रह्मचर्य का पालन इसीलिए साधक व साधना का अंग कहा जाता है।** भगवान पार्श्वनाथ के चिंतन को इसी दृष्टि से पालन करना चाहिये। प्रभु के जन्म कल्याणक पर सकल संघ हार्दिक बधाई। ✧✧

दृष्टि आत्म गुणों पर हो

- श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीष मुनि म. सा.

आत्मा मे छिपे परमात्मा को प्रकट करने के लिए स्वः का बोध प्राप्त करना आवश्यक है। स्वः के बोध से जड़ और चेतन का भेद होता है। भेद होने पर साधक-कर्म के आस्रव, पुण्य, पाप से ऊपर उठकर सम्यक्त्व की ओर बढ़ता है। सम्यक्त्व से मिथ्यात्व टूटता है। सत्य का बोध होता है। उसे सब में आत्मा के दर्शन होते है। साम्य भाव आता है। ऊँच-नीच, अच्छे-बुरे का भाव समाप्त होता है। उसके जीवन में सकारात्मकता आती है। सकारात्मकता है। सबमें अभेद दृष्टि से आत्मा के दर्शन करना, हर आत्मा में आठ गुण है। उनके अष्ठगुणो का वर्णन करना है। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख, अनंत शक्ति, क्षायिक सम्यक्त्व, अटल अवगाहना, अमूर्तपना, अगुरुलघु आदि अष्ठ गुणों का बंद आँखों से निज में ध्यान करता है। एवं पर में भी खुली आँख से सब में आत्मा के दर्शन करता है।

जिन दर्शन- अर्थात धारणा से सब में आत्मा है उस धरणा को पुष्ट करना।

मिथ्या दर्शन- सबके कर्मों को देख कर, उनके शरीर का वर्णन करना, उसके आधार पर अच्छा बुरा मानना, राग-द्वेष करना, संसार को बढ़ाना यह है नकारात्मक सोच।

वर्ष 2017 में आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव के शरण में रहकर आत्मा दर्शन, जिन दर्शन का पोषण हुआ। जनवरी से अप्रैल तक एकान्त मौन साधना रही, उसमें अधिक आत्म पोषण हुआ। विहार में प्रतिकूलता व खुली आँखों से साधना का अवसर मिला। महावीर जयंती, अक्षय तृतीया करते हुए मध्य प्रदेश में प्रवास रहा। चातुर्मास प्रवेश तक पूरी सजगता से साधना करने का भाव रहा। इस वर्ष का चातुर्मास भी साधनात्मक रहा। वर्ष 2017 में साधना पुष्ट हुई। अकर्त्ता भाव पुष्ट हुआ। दृष्टा भाव से व्यवहार सहज हो गया। साधना मुख्य रही। चातुर्मास के बाद विहार काल में भी साधना निरंतर चल रही है।

आप और हम सभी साधक वर्ष 2017 का प्रतिक्रमण कर नववर्ष 2018 को केवली नही परन्तु केवली समान जीने का संकल्प करेगें तो निश्चित देव, गुरु, धर्म की कृपा से वीतरागता की ओर बढ़ेंगे। नववर्ष आप और हम सभी का साधनात्मक हो, आत्म पोषण का हो। यही हमारा संकल्प हो, 'सिद्धा-सिद्धी मम् दिसन्तु'। ✧✧

केवल प्रोग्रेस या संस्कार?

वर्तमान में इस वैज्ञानिक युग के हर परिप्रेक्ष में प्रोग्रेस होती जा रही है। लेकिन संस्कारों की बात करें तो आज संस्कारों का स्तर घटता जा रहा है। इसलिए आज भौतिक सुविधाओं की कमी नहीं, लेकिन अंतर की समाधि डाउन हो रही है। आज अधिकांश व्यक्तियों की यही सोच बन गई है कि पढ़-लिखकर डॉक्टर, इंजीनियर, टीचर आदि की डिग्री प्राप्त कर ली, बस हो गई हमारे जीवन में प्रोग्रेस। यहाँ तक कि माता-पिता भी इसी में अपनी और बच्चों की शान समझते हैं। परंतु व्यक्ति 'संस्कारों' से बड़ा होता है न कि जाति और डिग्रियों से। हमें यह सोचना है कि बिना संस्कारों के ये डिग्रियाँ कुछ काम की नहीं। आज संस्कारों के अभाव में हमारे जैन बालक-बालिकाओ के क्या हाल हो रहे हैं, वे हमें प्रत्यक्ष नजर आ ही रहे हैं।

"मन में खुशी छुपाएं रहना न साल भर"

- प्रखर चिंतक पूज्य श्री ऋषि मुनि जी म. सा.

"जीवन आनंद की कस्तुरी से भरा है, ये कस्तुरी हमारी ही सोच स्वभाव में हैं। हम खुश रहेंगे तो खुशी फैलेगी।"

जबकि आजकल हर कोई यह कहता मिल जाता है कि बहुत टेंशन है। हाँ भई व्यस्तता, काम का बोझ समस्याओं का समाधान करना तनाव में डाल देता है। **मनोवैज्ञानिकों का मानना भी है कि खुशी की तलाश के लिए बाहर भटकने की जरुरत नहीं। यह तो हमारे अंदर ही छुपी रहती है।** तो क्यों न अपनी खुशी को अपनों में बांटकर, सबको दें खुशी। अब आप कहेंगे कि हम क्या करें? खुशी बांटने के लिए तो बताता हूँ:-

☐ औरों का आदर करें।:-

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि जब आप दूसरों का आदर करते हैं तो बदले में आपको भी मान-सम्मान मिलता है। वर्जीनिया यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों का कहना है कि दूसरों का आदर करने पर मन के अंदर अपने आप खुशी का भाव प्रकट होता है।

☐ जिम्मेदारी बांटे दें।:-

अगर आपके पास काम की अधिकता रहती है तो अपने कुछ कामों को बंटवारा कीजिये। इससे आप व्यर्थ के तनाव से बची रहेंगी। कामों का आपस में बंटवारा कर लेने पर आपको अधिक थकावट नहीं होती है। साथ ही अपने लिए भी अधिक वक्त मिल जाता है। औरों को जिम्मेदारी देने से परस्पर प्रेम, संगठन और सहकार सरोकार बढ़ता है।

☐ हॉल चाल जरुर पूछें।:-

अपनों से बात करने का मौका न चूके। सुख दुःख के हाल चाल पूछें। मानसिक प्रसन्नता संवाद से बढ़ती है। बैरुखी से नहीं। ये बहुत बड़ा सामाजिक सूत्र है।

☐ ईष्ट चिंतन करें:-

आत्मा और परमात्मा का मेल है, साधनायह मानकर चलें कि जो करना है हमें करना है। दान, सेवा, उपकार अनुकम्पा, कर्त्तव्य पालन धर्मचिंतन स्वाध्याय, तप-जप ये हमारा परम हितैषी कार्य है, जो हमें नियमित करना है।

☐ प्रकृति के करीब रहें:-

जब भी मौका मिले प्रकृति के करीब वक्त गुजारने की कोशिश करें। प्रकृति को सुंदर संरचना देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। प्राकृतिक पर्यटन शरीर और मन को खुश कर देता है।

☐ गलती स्वीकार करिए:-

भले ही आपसे कोई छोटी सी भूल हो, अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिए। अपने मन में यह भाव नहीं लाना चाहिए कि आप उससे बड़ी है और वह आपसे छोटा है। अपनी गलती स्वीकार कर लेना बड़प्पन की निशानी है। इससे मन में खुशी का भाव उत्पन्न होता है। प्रेम असीम हो जाता है।

तो नए केलेन्डर वर्ष में अपनी खुशी को खुश रह कर, खुशी बांट कर बढ़ाएंगे ना? ✧✧

लाख टके की बात
जीवन में किसी का भला करेंगे
तो लाभ होगा ।
औरों पर दया करेंगे
तो वो आपको भूल नहीं पाएगा ।

मानवीय जिज्ञासा और आत्मतत्व

- पूज्या डॉ. अक्षय ज्योति जी म. सा.

संसार भर के मनीषी मानते हैं कि जिज्ञासा मानव मन का सहज गुण है। ज्ञानी-अज्ञानी तथा शिक्षित व अशिक्षित सभी के मन में जिज्ञासा के भाव होता है। प्रमुख मनोवैज्ञानिक बर्क के अनुसार **'पहली और सहज भावना जो हम मानव मन में पाते हैं- वह है जिज्ञासा की।'** अंतर है तो तीव्रता का। किसी के मन में तीव्रतर जिज्ञासा भाव उसे समस्त सांसारिक सुखों का परित्याग कर ईश्वरीय सत्ता के रहस्य को जानने के लिए प्रेरित कर देता है, किंतु सामान्य तीव्रता भाव व्यक्ति की सांसारिकता के लिए रहते हुए सृष्टि के रहस्यों को जानने के लिए उत्प्रेरित करता है। शास्त्रों के अनुसार जिज्ञासा कुछ पूछने के लिए होती है। उसे उत्तर की तलाश है, लेकिन तलाश बौद्धिक है, आत्मिक नहीं।

जिज्ञासा से भरा हुआ व्यक्ति निश्चित ही उत्सुक है ओर चाहता है कि उत्तर मिले, लेकिन उत्तर बुद्धि में संजो लिया जाएगा, स्मृति का अंग बनेगा, ज्ञान बढ़ेगा, आचरण नहीं। यहीं से आत्मतत्व को जानने और मानने की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

हमारी जीवन यात्रा और आत्मतत्व

हमारी जीवन यात्रा का एक ही उद्देश्य है। आत्मतत्व का साक्षात्कार। जो व्यक्ति अपने आत्मतत्व को जान जाता है, वह परमात्मा को जान लेता है। एक महात्मा मंदिर के बाहर ही बैठे रहे, जबकि उनके सभी शिष्य मंदिर के भीतर जाकर भगवान के दर्शन कर लौट आए। एक भक्त ने उनसे पूछा कि- **'गुरुजी क्या आप भगवान के दर्शन करने भीतर नहीं जाएंगे?** इस पर महात्मा ने कहा कि मैंने यहीं से भगवान के दर्शन कर लिए हैं। जिज्ञासु भक्त ने पूछा कि यहां से तो भगवान की मूर्ति दिखाई नहीं दे रही है? महात्मा ने कहा कि भगवान की मूर्ति मेरे मन में ही बसी है। इसलिए उनके दर्शन करने के लिए मुझे मंदिर के भीतर जाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि अपने मन के बंद दरवाजे खोलने की जरुरत है।

यह सुनकर सभी शिष्य असमंजस में पड़ गए, तब महात्मा ने उन्हें समझाया कि भगवान के दर्शन पूजा-पाठ या तीर्थ करने से नहीं होते। ये साधन हो सकते हैं, लेकिन सत्य को जानने के लिए परमात्मा के दर्शन हो जाते है। सत्य को जानने के लिए आत्मतत्व को जानना होता है। जो हमारे भीतर ही मौजूद है। महात्मा ने आगे कहा कि हमारा प्रत्येक निर्णय सत्य होने का दावा करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि असत्य को जान लेना ही सत्य है। इसलिए भगवान को खोजने के बजाय पहले सत्य को जानों। **जब आप सत्य को जान जाओगे, तो आत्मतत्व को जान जाओगे और जब आत्मतत्व को जान गए, तब परमतत्व को जान गए। वैसे आत्मतत्व और परमतत्व एक नहीं है, लेकिन अलग-अलग भी नहीं हैं, क्योंकि जैसा आत्मतत्व वैसा ही परमतत्व और जैसा परमतत्व वैसा ही आत्मतत्व। इनमें कोई अंतर नहीं है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि** - जब तक आप यह अनुभव नहीं करते कि **'आप स्वयं देवों के देव हो। तब तक आप मुक्त नहीं हो सकते।** ज्यादातर लोग समझते हैं कि उनका शरीर ही आत्मतत्व हैं, जब उनकी मृत्यु होगी, तब आत्मतत्व भी मर जाएगा। आगमवाणी कहते हैं कि **आत्मा को शस्त्र से काटा नहीं जा सकता, अग्नि उसे जला नहीं सकती, जल उसे गला नहीं सकता और वायु उसे सुखा नहीं सकती। यानी जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नवीन शरीर धारण करती है।** आत्मा और शरीर के मिलन से ही जीवात्मा बनता है। लेकिन आत्मा चिर स्वतंत्र है।

✧✧

सन्त ने कैसे किया वैभव का परित्याग ?

- साध्वी पू. डॉ. श्री चारित्रलता जी म. सा.

एक महात्मा नगर से बाहर कुटिया में रहते थे। उनका अधिकांश समय भगवद्भक्ति एवं मानव-सेवा में व्यतीत होता था। नागरिकजन उनके चरणों में पहुंचकर असीम शान्ति का अनुभव करते थे। शनैःशनैः उनकी प्रसिद्धि राजा तक पहुँची। उन महात्मा के दर्शन करने एवं सान्निध्य पाने हेतु राजा की भी उत्सुकता बढ़ने लगी।

एक बार अवसर पाकर राजा संत की कुटिया पर पहुँचे। महात्मा के चरण-स्पर्श कर बोले- गुरुदेव! मेरा निवेदन स्वीकार एक बार मेरे महल में पधारें एवं सपरिवार मुझे उपदेश प्रदान करें।

महात्मा- मुझे महलों में दुर्गन्ध आती हैं

राजा - मेरे महल इत्र से सुवासित हैं, सभी तरह के राजसी ठाट हैं, फिर भला कैसे दुर्गन्ध? मुझे कुछ समझ में नहीं आता। कृपया समाधान कीजिए।

महात्मा- राजन् आपकी जिज्ञासा को अवसर आने पर शान्त करेंगे। पहले कुछ बीमार लोगों की सेवा करने जाना है। आप भी मेरे साथ चलें।

राजा आज्ञापालक सेवक की तरह महात्मा के पीछे-पीछे चल दिया। महात्मा चमारों की बस्ती में गए। दीन-हीन लोगों की समस्याएं सुनी। रुग्ण और वृद्धजनों की सेवा में व्यस्त हो गए। वहाँ चारों तरफ घरों में चमड़ा भिगोया जा रहा था। राजा चमड़े की बदबू से घबराने लगा और संत से शीघ्र वहां से चलने का संकेत करने लगा।

महात्मा- अभी जल्दी क्यों करते हो? मुझे मेरा काम कर लेने दो।

राजा- महात्मन! यहाँ चमड़े की दुर्गन्ध आ रही है। इससे मेरा सिर फटने लगा है। थोड़ा विलंब होने पर वमन भी हो सकता है।

महात्मा- देखो, ये लोग भी यहां रहते हैं, शान्ति से जीवन यापन करते हैं। इनको तो दुर्गन्ध नहीं सताती। इनके बाल-बच्चे भी मस्ती में खेल रहे हैं- खा-पी रहे हैं, दौड़-भाग भी कर रहे हैं।

राजा- महात्मन्! ये सदैव इस वातावरण में रहते हैं, अतः इनको बदबू नहीं आती है। यह वातावरण मुझे तो असह्य लग रहा है।

महात्मा- राजन्! जैसे इन्हें यहाँ हमेशा रहने के कारण चमड़े में दुर्गन्ध नहीं आती वैसे ही तुम सदा महलों में रहते हो, इसलिए तुम्हें भी महलों में बदबू नहीं आती है। किन्तु वहाँ मुझे सोने की दुर्गन्ध आती है। विषाय-कषायों की सड़ांध से सिर फटने लगता है। उस दमघोटू वातावरण में मैं कुछ समय के लिए भी नहीं ठहर सकता।

महात्मा की बात सुनकर राजा के विवेक-चक्षु खुल गए। बात समझ में आ गई कि **जो जिसमें अनुरक्त होता है उसे वही अच्छा लगता है। संसारीजनों को संसार सुखद लगता है तो ज्ञानीजनों को संसार दुःख दर्द का सागर लगता है। इस संसार-सागर में उन्हें दुःख दर्द का ही आभास होता है।**

अतः वे संसार में रहकर भी जल कमलवत् निर्लेप रहते हैं।

✧✧

वर्तमान परिपेक्ष में प्रभु पार्श्वनाथ का जीवन संदेश

- अविनाश चोरडिया जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

जब भी हमारे समक्ष महापुरुषों के प्रेरक पावन पर्व प्रसंग उपस्थित होते हैं तो महान आत्माओं के आदर्श एवं शिक्षाओं का तो स्मरण आता ही है। अपने वर्तमान पर भी सहज ही दृष्टि चली जाती है।

ऐसे मैं हम अपने वर्तमान पर दृष्टि डालते हैं तो हमें कई सुधारों की आवश्यकता अनुभव होती है। मैं कुछ बातों पर आपसे चर्चा करके इन्हें सुलझाने, समाधान पाने का प्रयास करना चाहता हूं।

1. जैसे हमारी धर्म आस्था श्रद्धाभाव में निरंतर गिरावट आ रही है। हमारी युवा पीढी ही नहीं हमारे बड़े बड़े धुरंधर भी धर्म स्थानों में आते हैं। **मगर स्वाध्याय में रुचि नहीं लेते।** इसीलिए **ज्ञान ध्यान की स्थिति क्षीण हो रही है।** जबकि करुणासागर भगवान पार्श्वनाथ ने विचार शून्य आचार की, ज्ञान और विवेक शून्य क्रिया-काण्डों को जरा सा भी महत्त्व नहीं दिया। उनका स्पष्ट अभिमत था कि **जो भी क्रिया की जाए, वह क्रिया विवेक और ज्ञान से जुड़ी हुई होनी चाहिए। जिस क्रिया के साथ ज्ञान नहीं होता, वह क्रिया निरर्थक सिद्ध होती है।**

आज समाज में फिर से बाहरी क्रियाओं की बाढ़ सी आ रही है। क्रियाएँ निश्चित रुप से होनी चाहिए। लेकिन क्रियाओं की आराधना से किसी को तनिक भी छोटा बड़ा, हल्का भारी दिखाकर विरोध नहीं होना चाहिए। **वे क्रियाऐं कभी भी मान्य स्वीकार्य नहीं हो सकती,** जिनका ज्ञान शून्य होकर अविवेकी होकर किया जा रहा है, अथवा उनके साथ केवल साम्प्रदायिक विधिनिषेधों, कषाय और विषमता का बोलबोला हो। दुर्भाग्य से आज ऐसा भी हो रहा हैं इस ओर जागरुकता के साथ ध्यान दिया जाना चाहिए। यहाँ प्रभु पार्श्वनाथ से प्रेरणा लेकर हमें याद रखना चाहिये कि 'हम किसी क्रूर कर्म की तपग्नि में हाथ सेक कर कहीं हिंसा या आडम्बर का अंग तो नहीं बन रहे हैं। कहीं किसी मेघमाली के अनावश्यक उपक्रम को मूक दर्शक होकर तो नहीं देख रहे हैं?

भगवान पार्श्वनाथ की जन्म जयंती के अवसर पर **हमें चाहिए कि हम ज्ञान के हर पक्ष को सम्यक् बनाने के लिए प्रयत्नशील बनें। ज्ञान का पक्ष जिस साधक का सम्यक बन जाता है वह स्वयं भी तिरता है एवं अन्यों को भी भव पार होने में संबल का कार्य करता है। ज्ञान और विवेक है तो जीवन में सब कुछ है। ज्ञान और विवेक के लुप्त होने पर जीवन में एक ऐसा भटकाव प्रारम्भ होता है कि व्यक्ति जन्म-जन्मान्तरों तक बार बार उलझनों में पड़ जाता है।**

इस विचार के साथ यहाँ मैं स्पष्ट कर दूं कि **मैं यहां किसी अन्य को उपदेश नहीं दे रहा हूँ बल्कि मैं स्वयं को भी इस सुधार से जोड़कर स्वयं का भी सुधार करने की भावना रख रहा हूँ।**

मेरा स्पष्ट रुप से मानना है कि संघ समाज में शिथिलाचार यदि फैलता है। तो इसकी प्रथम जिम्मेदारी श्रावक वर्ग की है। श्रावक यदि ज्ञान और क्रिया से अनभिज्ञ है तो शिथिलाचार कैसे रुकेगा?

एक और खास बात कि शिथिलाचार रोकना है केवल आलोचना करने से नहीं रुक सकता। शिथिलताचार रोकना है तो प्रभु पार्श्वनाथ की तरह सजगता और आत्मीयता को साथ रखना होगा क्योंकि जो विकार ग्रस्त, आचरण में गिर रहा है, उसे

संभालना और संभलने देना यह भी तो 'अम्मा प्रिया' का काम है।

प्रभु पार्श्वनाथ ने यही किया था, पहले कमठ को समझाया कि - जो तुम कर रहे हो वो अज्ञान भरा पाप है। इसे रोको, लेकिन जब वो नहीं माना तो उपस्थित सेवकों की सहायता से लकड़ी को चिरवाया और राजकुमार पार्श्व ने जलते नाग युगल को नवकार मंत्र सुना कर उन्हें सद्गति प्रदान की।

कमठ को भी अपनी हठ, अपनी अज्ञानता अपने पाप पर शर्मीदगी हुई और वह मुंह छुपा कर चला गया। **इस उदाहरण से स्पष्ट है कि हमें शिथिलाचार पर केवल आलोचना ही नहीं करनी है बल्कि समस्या की जड़ पर प्रहार करना है। संघ समाज में जहां कहीं भी गलत होता दिखाई दे रहा है तो प्रचार नहीं उपचार करना है। अपने लोगों को अपने आराध्य-अनुकरणीय महापुरुषों और मान्यताओं के मान-सम्मान से न तो खेलना है और न किसी ओर को खेलने देना है। हमें पापी से नहीं पाप से घृणा करनी है।**

जब भी हम समाज सुधार की दृष्टि से अपना कदम आगे बढ़ाएं तो हमें अपने समक्ष प्रभु महावीर एवम् भगवान पार्श्वनाथ के चरित्र से प्रेरणा लेकर समतापूर्वक कार्य करना चाहिए। प्रभु पार्श्वनाथ का जीवन तो इस क्षेत्र में इतना महत्वपूर्ण है कि अनेक भवों में जिन जीवों में आपसी बैर रहा और जिन्होंने परस्पर जन्म लेने के बाद एक-दूसरे पर पूर्व जन्म के संस्कारोनुसार क्रोध-कषाय को भी प्राथमिकता दी है, ऐसे अनेक भव पूर्ण करने के पश्चात् ही भगवान पार्श्वनाथ ने समस्त प्रिय और अप्रिय विषयों को तटस्थ भाव से त्यागते हुए स्वयं को एक ही चातुर्मास में केवल्य ज्ञान प्राप्त करने योग्य बनाया था। यह भगवान पार्श्वनाथ के जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा हैं। इन्हीं भावनाओं के साथ प्रभु पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पर सादर नमन हार्दिक शुभकामनाएं। ✧

सबसे बड़ा आगम दृष्टिवाद क्यों ?

३२ आगम में सबसे बड़ा आगम दृष्टिवाद है। इसके पाँच विभाग है। **१. परिकर्म, २. श्रुत, ३. पूर्वगत विचार, ४. अनुयोग, ५. चूलिका।** इन सभी में पूर्व का विशेष विवरण है। महाप्रज्ञावान गणधर भगवंत सबसे पहले दृष्टिवाद में चौदह पूर्व की रचना करते हैं। एक पूर्व से लेकर दस पूर्व तक ज्ञान वाले सम्यक् दृष्टि या मिथ्या दृष्टि दोनों ही हो सकते हैं। अभविमि नौ पूर्व की तीसरी आचार वत्थुतक्का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। दस पूर्वी से लेकर चौदह पूर्वी तक के साधु-संत-साध्वी एकान्त सम्यक् दृष्टि ही होते हैं। दस पूर्वो के रचित आगम को ही सत्य एवम् प्रामाणिक माना जाता है। पूर्वी का ज्ञान एवम् आहारक लब्धि सिर्फ सन्त-मुनिराज को ही होती है, साध्वियों को नहीं होती।

सभी चौदह पूर्वी मुनिराजों को भी आहारक लब्धि प्राप्त नहीं होती है। भव्य जीव मोक्ष में जाने के पूर्व तक आहारक लब्धि केवल चार बार ही प्राप्त कर सकते हैं। पूर्वो का ज्ञान, ज्ञानावर्णीय कर्मों के क्षयोपशमन से एवम् उत्कृष्ट, शुद्ध, संयम से प्राप्त होता हैं।

गणधर ही एकमात्र ऐसे रचनाकार हैं जो उसी भव में मोक्ष जाते हैं। शेष रचनाकार की स्थिति क्रमानुसार होती है। दस पूर्व से चौदह पूर्व धारी को पूर्वधर लब्धि प्राप्त होती है।

ऐसे अनेक दार्शनिक विषयों पर आध्यात्मिक गहराई से भरे चिन्तन से परिपूर्ण होने के कारण दृष्टिवाद को आगम में श्रेष्ठ माना जाता हैं।

प्रेषक : जेठमल जैन, दुर्ग

गृहदोष में पशु-पक्षियों की सेवा हैं फलदायक

- **सुशील जैन,** राष्ट्रीय मंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

वैसे तो प्रत्येक जीव को दु:ख-सुख, शुभ-अशुभ फल कर्मानुसार ही प्रापत होते हैं, लेकिन ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचाव और शुभ फल में वृद्धि के लिए अनेक उपाय प्रचलित हैं, इनमें से पशु व पक्षियों की सेवा भी एक हैं, भारतीय परिवारों में भोजन से पहले गाय और कुत्ते के लिए प्रतिदिन रोटी निकालने की परंपरा देखी जा सकती है, तो विभिन्न अवसरों पर पशुओं की पूजा भी होती है।

विभिन्न ग्रहों के कुप्रभाव से मुक्ति के लिए ग्रह विशेष से संबंधित पशु की सेवा करनी चाहिए, जो कि इस प्रकार हैं :-

सूर्यः- बैल (सांड) को गेहूं और गुड़ खिलाना, गौरेया को दाना चुगाना आदि सूर्य शांति के उपाय हैं।

चंद्रमाः- सोमवार को गाय को गुलगुले खिलाना, खरगोश को दूब डाला, चीटिंयों को मीठा डालना आदि चंद्रमा शांति के उपाय है।

मंगलः- बंदरों को चना खिलाना, लंगूरों को केले खिलाना, मुर्गियों को दाना चुगाना आदि मंगल शांति के उपाय हैं।

बुधः- गाय को घास या हरी सब्जियाँ खिलाना, तोतों को हरी मिर्च खिलाना या दाना चुगाना आदि बबुध शांति के उपाय हैं।

शुक्रः- कपिला गाय को आटा खिलाना, कबूतरों को दाना चुगाना कुत्ते को मीठी रोटी खिलाना मोर को दाना चुगाना आदि शुक्र शांति के उपाय है।

राहुः- सांप की सेवा, कुत्ते को दूध पिलाना, कछुओं को आटे की गोलियां खिलाना, कौओं को रोटी डालना आदि राहु शांति के उपाय हैं।

केतुः- मछली को सतरीठा की गोली ड़ालना, मछली को रामनाथ की गोली ड़ालना, अजगर सेवा, कौओं को चुग्गा ड़ालना आदि केतु शांति के उपाय हैं।

शनिः- काले कुत्ते को नियमित भोजन देना शनि ग्रह की शांति के लिए अति उपयुक्त है।

कई लोगों की आय तो अच्छी खासी होती है, लेकिन उनकी परेशानी खर्च को लेकर होती है। पशु सेवा से बढ़ते खर्च को नियंत्रित किया जा सकता है। शास्त्रों के अनुसार अलग-अलग राशि लग्न के उस भाव से संबधित ग्रह के प्रतिनिधि पशु-पक्षी के सेवा से लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

यह तो हुई जीव दया की बात, अब थोड़ी साधर्मी सेवा की बात भी कर लें। हमारे समाज में अनेक भाई बहन परिवार अवसरहीन हैं, समय की बात कहें या कर्मों का फेर, आज उनका जीवन दयनीय स्थिति में है।

उन्हें हम अपना, अपने जैसा जानकर सहायता करें। जैन कॉन्फ्रेंस की जीव दया योजना, मानव सेवा योजना, जीवन प्रकाश योजना इसी निमित से चलाई जा रही है। मुझे आशाहै ये कार्य आप अवश्य करेंगे।

✧✧

ऐतिहासिक तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ

- डॉ. दिलीप धींग जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

जैन धर्म के तेबीसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म आज से करीब तीन हजार वर्ष पूर्व पौष कृष्णा दशमी के दिन वाराणमी में हुआ था। उनके पिता राजा अश्वसेन और माता महारानी वामादेवी थीं। नौ हाथ अवगाहना (लम्बाई) युक्त नीलवर्णी उनकी काया थी। तीस वर्ष की उम्र में पौष कृष्णा एकादशी को पार्श्वनाथ ने दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के 84वें दिन उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। सत्तर वर्ष तक उन्होंने तीर्थंकर के रूप में देशनाएँ प्रदान कीं। सौ वर्ष की आयु में समेद शिखर पर उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। उनके धर्मसंघ में दस गणधरों सहित 54 हजार साधु-साध्वियाँ, करीब पाँच लाख व्रती श्रावक-श्राविकाएँ और करोड़ों साधारण अनुयायी थे।

जैन परम्परा में भगवान पार्श्वनाथ को प्रत्यक्ष चमत्कारी तीर्थंकर माना जाता है। मंत्र दिवाकर ग्रंथ में लिखा है कि **महाराणा प्रताप ने एक जैन मुनि के उपदेशानुसार संकट के समय भगवान पार्श्वनाथ की आराधना की थी और वे संकट मुक्त हुए थे।** भगवान पार्श्वनाथ से जुड़े अनगिनत चमत्कारिक किस्से और प्रसंग लोक-जीवन में प्रचलित हैं। उनके जीवन और चमत्कारों से जुड़ी अनेक कथाएँ साहित्य से निबद्ध हुई हैं। यही कारण है कि चौबीस तीर्थंकरों में से सर्वाधिक मन्दिर, मूर्तियाँ, स्तुतियाँ, यंत्र, मंत्र आदि भगवान पार्श्वनाथ के प्राप्त होते हैं। प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी, मराठी, तमिल, कन्नड, तेलुगू आदि प्राचीन और अर्वाचीन लगभग **सभी भारतीय भाषाओं में भगवान पार्श्वनाथ के हजारों स्तोत्र, भजन? गीत, काव्य, कथानक आदि लिखे और प्रयुक्त किये जाते रहे हैं। अतीतकाल से ही साहित्य और शिल्प की यह जुगलबन्दी अनवरत चल रही है। वीं शिल्प एवं भारतीय मूर्तिकला के वैभव और विकास में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं और चित्रों का विशेष स्थान है। पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं और चित्रों में भगवान के मस्तक पर नाग का फन विशेष तौर पर होता है। इन फणावलियों के अंकन में कला और आस्था के बेजोड़ संगम अनेक रूप में दिखाई देते हैं। इन पार्श्वनाथ के मस्तक पर पाँच, सात, नौ, ग्यारह, सौ और हंजार फणों तक की फणावलियाँ बनाई जाती रही हैं। हजार फणों से युक्त फणावली की मूर्ति वाले अनेक मन्दिर 'सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ' के नाम से विख्यात हैं। फणावली के अलावा अनेक मूर्तियों व चित्रों में आसन के रुप में भी नाग व नागिन को कमलवत् घुमावदार दर्शाया गया है।** इन मूर्तियों और चित्रों में नाग-नागिन के साथ भगवान पार्श्वनाथ का हजारों कलात्मक रुपों में अंकन व चित्रण हुआ है।

यह चित्रण उनके अखंड ध्यान, परम समता, अनंत वात्सल्य तथा उपसर्ग में अपार अड़िगता का सूचक है। मन्दिरों में विराजित मूर्तियों के अलावा देश-विदेश के अनेकों संग्रहालयों, गुफाओं, अभिलेखों, ताड़पत्रों आदि में भी पार्श्वनाथ के कलात्मक अंकन व चित्रण विद्यमान हैं।

जैन ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि साधनाकाल के दौरान कमठ नामक दुष्ट देव ने भगवान पार्श्वनाथ को कष्ट देना चाहा, परंतु उसी समय धरणेन्द्र और पदमावती, वेक्रिय लब्धि से नाग-नागिन के रूप में वहाँ उपस्थित होकर प्रभु को उपसर्ग (संकट) से बचाते हैं। पिछले जन्म में धरणेन्द्र-पदमावती नाग-नागिन ही थे, जिन्हें पार्श्वनाथ ने आग से बचाया और अंतिम समय

में नवकार महामंत्र सुनाया, जिससे उन्होंने भवनपति देवों के इन्द्रधरणेन्द्र और उनकी रानी पदमावती इन्द्रानी के रूप में देवलोक में जन्म लिया।

भगवान पार्श्वनाथ ने कर्मकाण्ड और अंधविश्वासों का प्रतिवाद किया और अहिंसा, करुणा, समता और क्षमा का उपदेश दिया। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का सम्पूर्ण परिवार भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा का अनुगामी था। भगवान महावीर के माता-पिता, मामा आदि भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के श्रावक-श्राविकाएं थे बौद्ध इतिहास का धर्मानंद कौशांबी, पदमभूषण पंडित सुखलाल सिंघवी, इतिहासकार राधाकुमुद मुकर्जी, राइस डेविड्स आदि मनीषियों के अनुसार भगवान बुद्ध ने आरम्भिक साधना काल में भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा स्वीकार की थी। पार्श्वनाथ की परम्परा में बुद्धों ने जैन सिद्धांत, तपाचार आंदि सीखे तथा उनका अभ्यास किया था। अनेक विद्वान उपनिषद् साहित्य पर भी भगवान पार्श्वनाथ के विचारों का प्रभाव स्वीकार करते हैं।

जैन धर्मदर्शन के पाश्चात्य विचारक डॉ. हर्मन जैकॉबी ने जैन ग्रंथों तथा बौद्ध ग्रंथों के आधार पर सर्वप्रथम भगवान पार्श्वनाथ को ऐतिहासिक तीर्थंकर सिद्ध किया। उनके बाद कोलब्रुक, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, शार्पेण्टियर आदि अनेक पाश्चात्य और पौर्वात्य विद्वानों ने भी भगवान पार्श्वनाथ की ऐतिहासिकता को असंदिग्ध बताया। वर्तमान में सभी इतिहासकार सुस्पष्ट रूप से भगवान पार्श्वनाथ को ऐतिहासिक महापुरुष स्वीकार करते हैं।

जैन दिवाकर पूज्य मुनि श्री चौथमलजी म. की प्रेरणा से तत्कालीन भारत की दर्जनों रियासतों और ठिकानों की ओर से महावीर जयन्ती (कार्तिक सुदी तेरस) की ही भाँति पार्श्वनाथ जयंती (पौष बदी दसमी) के अगते भी घोषित किए गए थे और उनका पूर्ण अनुपालन होता था।

✧✧

जीते जी करें अंगदान का संकल्प

लेकिन शर्त यह हो कि लाभ लेने वाला व्यक्ति युवा एवं शाकाहारी हो

विगत् दिनों नागदा जंक्शन निवासी श्री राजेन्द्र कांठेड़ जैन ने एक अनुकरणीय समाचार प्रेषित किया कि श्री रमेश जैन ने अपने 58वें जन्मदिन के अवसर पर एक किड़नी दान करने का निर्णय लिया। एक सादे समारोह में उन्होंने अपने मित्रों, शुभचिन्तकों के समक्ष यह निर्णय लिया । लेकिन जिस प्रकार से श्री रमेश जैन ने इस अंग दान के समक्ष अपनी शर्त बताई, वह निश्चित रूप से प्रशंसनीय है, अनुकरणीय है । जैसे उनका कहना है कि कीड़नी का रोगी पूर्ण रूपेण शाकाहारी हो, युवा हो । किड़नी लेने वाला व्यक्ति किसी संस्था के माध्यम से न आकर स्वयं अपनी डॉक्टरी जाँच और अन्य चिकित्सा के प्रमाण उपस्थित करें । श्री रमेश जैन उपाख्य मुनीमजी ! ने जो निर्णय लिया है जैन कॉन्फ्रेंस परिवार उसकी सराहना करता है एवम् समाज के अन्य व्यक्तियों से भी यह निवेदन करता है कि हम अपने शारीरिक स्थितियों की अनुकूलता देखते हुए अंगदान के संबंध में उदारमना होकर विचार करें । स्मरण रहे अंगदान के दानी को यह दान देने के पहले डॉक्टरी जाँच करानी आवश्यक होती है । डॉक्टर जब सलाह देते हैं तभी यह अंगदान संभव होता है । अतः निःसंकोच मरणोपरांत अंगदान देने के लिए जीते जी अंगदान का संकल्प करने का प्रयास करें।

- सम्पादक मण्डल

रात 12 बजे मनाते हैं जन्म दिन तो हो जाए सावधान, बुला रहे हैं दुर्भाग्य को..

- **अतुल बोकरिया जैन,** राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, जैन कॉन्फ्रेंस

एक अजीब सी प्रथा इन दिनों चल पड़ी है वो है रात 12 बजे शुभकामनाएं देने और जन्मदिन मनाने की। लेकिन क्या आपको पता है भारतीय शास्त्र इसे मानता है? आज हम आपको यही बताने जा रहे हैं कि वास्तव में ऐसा करने से कितना अनिष्ट हो सकता है।

आज कल किसी का बर्थर्ड हो, शादी की सालगिरह हो या फिर कोई और अवसर क्यों ना हो, रात के बारह बजे केक काटना फ़ैशन बन गया है। लोग इस बात को लेकर उत्साहित रहते हैं कि रात को बारह बजे केक काटना है। या दोस्तों यारों का जन्म दिन रात के बारह बजे ही सेलिब्रेट करना है। लेकिन वास्तव में अंग्रेजी तिथि अनुसार बर्थडे या एनिवर्सरी मनाना किसी के लिए भी शुभ नहीं है। इसके पीछे कुछ ऐसे कारण है जिनका सीधा हमारे शास्त्रों से है।

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि लोग अपना जन्म दिन 12 बजे यानि निशीथ काल (प्रेतकाल) में मनाते हैं। **निशीथ काल रात्रि का वह समय है जो समान्यतः रात 12 बजे से रात 3 बजे के बीच होता है। आमजन इसे मध्य रात्रि या अर्ध रात्रि काल कहते हैं।** शास्त्रानुसार यह समय अदृश्य शक्तियों, भूत व पिचाश का काल होता है। इस समय में यह शक्ति अत्यधिक रूप से प्रबल हो जाती है।

हम जहां रहते हैं वहां कई ऐसी शक्तियां होती है, जो हमें दिखाई नहीं देती किंतु बहुधा हम पर प्रतिकूल प्रभाव ड़ालती है। जिससे हमारा जीवन अस्त-व्यस्त हो उठता है और हम दिशाहीन हो जाते हैं। जन्म दिन की कई-कई पार्टियों में अक्सर मदिरा व माँस का चलन भी होता है और बाकी आम पार्टियों में ग्रेरिष्ठ चटपटे व्यंजन भोजन का हिस्सा होते हैं। ऐसे में प्रेतकाल में केक काटकर सेवन करने से या तामसिक व व्यंजनदार भोजन से अदृश्य शक्तियाँ वहां मंड़राती हैं और वे प्रतिकूल असर करती हुई व्यक्ति की आयु व भाग्य में भी कमी करती हैं और दुर्भाग्य उसके द्वारा पर दस्तक देता है।

साल के कुछ दिनों को छोड़कर निशीथकाल महानिशीथकाल बनकर शुभं प्रभाव देता है जबकि अन्य समय में दूषित प्रभाव देता है। **शास्त्रों के अनुसार रात के समय दी गई शुभकानाएँ प्रतिकूल फल देती हैं।**

शास्त्रों के अनुसार दिन की शुरूआत सूर्योदय के साथ ही होती है और यही समय ऋषि-मुनियों के तप का भी होता है। इसलिए इस काल में वातावरण शुद्ध और नकारात्मकता विहीन होता है। ऐसे में शास्त्रों के अनुसार सूर्योदय होने के बाद ही व्यक्तित को बर्थडे विश करना चाहिए।

रात के समय वातावरण में **रज** और **तम** कणों की मात्रा अत्यधिक होती है और उस समय दी गई बधाई या शुभकानाएँ फलदायी ना होकर प्रतिकूल बन जाती हैं।

आशा करते हैं हमारे द्वारा प्रस्तुत जानकारी से सम्पूर्ण समाज, परिवार खुशहाल बनें।

नए साल बधाई देते हुए मैं सभी के जीवन में आनंद-मंगल की कामना करता हूँ। मेरी मंगल कामना है कि आप सभी का जीवन नए वर्ष में सुख-समृद्धि से भरपूर बनें। आप स्वस्थ रहें और सक्रिय रहें।

✧✧

श्री चिन्तामणि स्तोत्र (हिन्दी भावाजंली)

दिव्य धवल मणिमय प्रभा निर्मल करुणाधार ।
मंगलदाता ज्योतिमय शुक्ल ध्यान साकार ।।
त्रिभुवन पति प्रभु पार्श्व का रुप अनुपम मुक्त ।
आलम्बन है अवनि का चिदानंदघनयुक्त ।।

चिन्तामणि यश हंस की गति सर्वत्र अनंत ।
अंधकार हर ज्योति दे व्यापे सकल दिगंत ।।
सुर विस्मित, दानव चकित, मनुज रहे स्तब्ध ।
जलधि ज्वार फैनिल करे लीला ललित सुलब्ध ।।

तम हर सूर्य समान प्रभु, सकल सुखों की खान ।
काम मौह मद वश करे, मौक्ष मार्ग सौपान ।।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि, पूर्ण करो सब आस ।
आनंदमृत पार्श्व का, नाम सहज विश्वास ।।

श्री चिन्तामणि पार्श्व प्रभु दाता सदा अभिष्ट ।
संजीवनी सम आप हो भक्तजनों के ईष्ट ।।
ध्यान आपका जब धरुं मिले सहज आनंद ।
ऋद्धि सिद्धि मुक्ति मिले, कटे कर्म के फंद ।।

चिन्तामणि रक्षा करों मेरे प्राणाधार ।
मौहअंध को दूर करे हे कलि काल निवार ।।
भक्त आपका जो भजे प्रभु आपका नाम ।
पाए ज्ञानधन लक्ष्मी सुखद सहज आराम ।।

आप उदित भानू सदृश हरते घन अंधियार ।
कल्पवृक्ष सम सुखद हो प्रतिपल दरिद निवार ।।
सिंह शिशु से भागता ज्यों गजसंकुल ठौर ।
अग्नि से लकड़ी जले, अमृत से विष घौर ।।

श्री चिन्तामणि मंत्र जप पाओ शिव सुखधाम ।
'नमिऊण' श्रीसम्पन्न यह अर्हत युक्त ललाम ।।
यह त्रिलोक मंत्रित करे विषहर मुक्तामुक्त ।
आशा औ समृद्धि दे अक्षर 'व' 'स' 'ह' संयुक्त ।।

'श्री चिन्तामणि मंत्र' की महिमा अपरम्पार ।
योगी चित्त चाहे सदा श्रींकार ह्रींकार ।।
साध भाल ओ भुजा पर, नाभिकमल धर ध्यान ।
शिव पद पाओ पार्श्वभज चाहे नित निर्वाण ।।

– हुकमचंद जैन 'मेघ', नई दिल्ली

प्रतिभावान रचनाकारों को सादर आमंत्रण

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जैन कॉन्फ्रेंस का मुख पत्र 'जैन प्रकाश पाक्षिक' एक शताब्दी से भी अधिक वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रहा है । जैन प्रकाश के पाठकों की संख्या लगभग एक लाख से अधिक परिवार एवम् व्यक्ति हैं । प्रति माह दो अंकों के माध्यम से जैन प्रकाश लगभग तीस हजार (30,000) प्रति पखवाड़े में प्रकाशित हो रहा हैं । जैन पत्रकारिता में ऐसे उल्लेखनीय पत्र में यदि आप अपनी सम-सामयिक रचना प्रेषित एवम् प्रकाशित करना चाहते हैं तो आज ही अपनी कलम उठायें और जैन प्रकाश को जैन धर्म से संबंधित जानकारी से भरें लेख तत्काल प्रेषित करें ।

स्मरण रहे कि जैन प्रकाश में प्रकाशित लेखों की गुणवत्ता विद्वान सम्पादक मण्डल देखता एवं चयनित करता हैं । इसलिए कोई भी यह आग्रह न करें कि जो कुछ भी भेजा गया है, वह प्रकाशित होगा ही । आशा है कि हमें आप सबका विपुल सहयोग प्राप्त होगा । – प्रधान सम्पादक

ध्वनि प्रदूषण का विकल्प एक ध्यानविधि

- रजनीश जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, युवा शाखा

धरती पर इस समय कई किस्म के प्रदूषण पैदा हुए हैं, उनमें से एक ही ध्वनि प्रदूषण । दिन-रात यंत्रों के शोरगुल से घिरा आदमी किसी तरह इससे निजात पाना चाहता है, लेकिन जहां सारा जमाना ही इस आक्रमण को भुगत रहा है वहां एक अकेला आदमी क्या कर सकता है? इस प्रदूषण को रोक तो नहीं सकता, लेकिन अपने रुख को बदल सकता है।

श्री पार्श्वनाथ तंत्र में एक सरल सी ध्यान विधि है जो इतनी सटीक है कि मानों इक्कीसवीं सदी के लिए बनाई गई थी। वह विधि है :-

ध्वनि के केन्द्र में रहता है व्यक्तिः-

आप सब जानते हैं कि ध्वनियाँ तो सदा ही मौजूद हैं। चाहे बाजार हो या हिमालय की गुफा, ध्वनियाँ सब जगह हैं। हम कितना ही चुप होकर बैठ जाएं, लेकिन कोई न कोई ध्वनि तो हमारे कर्ण-कुव्हरों से टकराती ही है। इसके विपरीत यह भी सत्य है कि हम कभी भी कोई बात शांति से नहीं सुनते। कभी संगीत सुनते हैं तो कभी भाषण सुनते हैं, कभी फिल्म देखते हैं, कभी मोबाईल पर बात करते हैं। कुल मिलाकर हम हर समय ध्वनि से घिरे रहते हैं। क्योंकि चुप बैठना, शांति से सुनना हमारी आदम में ही शुमार नहीं है।

ध्वनियों की एक विशेषता है कि जब भी कोई ध्वनि होगी और आप सुनने लगेंगे तो आप उसके केन्द्र में होंगे, क्योंकि सभी ध्वनियाँ आपके पास आती हैं, आप ध्वनियों के पास नहीं जातें। यह बात देखने की क्रिया में नहीं होती, क्योंकि दृष्टि सीधी रेखा में जाती हैं। जब आप देखते है तो आपसे दृश्य तक एक रेखा खिंच जाती है, लेकिन ध्वनि वर्तुलाकार घूमती है, वह रेखाबद्ध नहीं होती है।

ध्वनि के संदर्भ में वैज्ञानिक शोध कहता है कि हम सिर्फ दो प्रतिशत सुनते हैं, अट्ठानवें प्रतिशत अनसुना कर देते हैं। अगर हम शत्-प्रतिशत सुनेंगे तो पागल हो जाएंगे। पहले यह समझा जाता था कि इंद्रियाँ द्वार है, जिनसे बाहर की दुनियाँ हमारे मन-मानस में प्रवेश करती है, लेकिन अब वैज्ञानिक कहते हैं कि इन्द्रियाँ द्वार नहीं हैं, वे उतनी ही खुलती है जितनी खोली जाती हैं। इन्द्रियाँ एक नियंत्रण, एक सेंसर का काम करती है। वे पहरेदार की तरह हर क्षण देखती रहती है कि किसे भीतर जाने दिया जाए और किसे नहीं, यह अच्छी तरह जाती हैं।

इसलिए आप जब इस ध्यान विधि का प्रयोग करेंगे तो शुरु में आपका सिर चकराने लगेगा। उससे आप विचलित न हों। केन्द्र पर रहें और जो कुछ हो रहा है उसे होने दें। अपनी इंद्रियों को शिथिल करें, मन, बुद्धि सब कुछ को विश्राम में जाने दें और एक खुला आकाश बन जाएं।

उदाहरण के लिए अहिछत्रा में प्रभु पार्श्वनाथ पर मेघमाली के उपसर्ग को ही लें, वहाँ भगवान स्वयं में केन्द्रित होकर ही उपसर्ग निरपेक्ष हो गए थे। मेघमालीने अनेक प्रयास किए, आंधी, बरसात, धूल, तेज हवाएं जैसी प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित किए, लेकिन ध्यानस्थ भगवान ने स्वयं को भयंकर ध्वनियों से मुक्त रहते हुए स्वयं में केन्द्रित रहकर अपनी साधना को सतत् बनाएं रखा। इससे मेघमाली पराजित हो गया ।

ऐतिहासिक घटनाओं में यह भी उल्लेख मिलता है कि इन्द्र-इन्द्राणी, धरनेन्द्र और पद्मावती ने प्रभु की रक्षा की। स्वयं भगवान को अपने फनों के ऊपर लेते हुए अपार जल राशि से ऊपर उठा लिया, लेकिन यह भी सत्य है कि भगवान स्वयं में लीन रहे और किसी भी उपसर्ग से अपरिचित रहते हुए साधना में डूबे रहें। वर्तमान में भी ध्वनि के प्रकोप से बचने के लिए प्रभु प्रेरणा से हमें स्वयं में केन्द्रित होकर बाह्य ध्वनियों से मुक्त रहना चाहिए। ✧✧

पौराणिक-कथा

हिमायली ठंड में धर्म की अंतिम परीक्षा

- डॉ. शोभानाथ लाल, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। वर्षों बीत गए थे। महाराज युधिष्ठिर को धर्म का शासन करते-करते प्रायः छत्तीस साल हो चले थे। उनके हृदय में एक दुःख भुलाए नहीं भूलता था। राज्य प्राप्ति के लिए कितना बड़ा नरसंहार हुआ था अनेक संगे-संबंधी, प्रियजन, गुरुजन और स्वजनों का अन्त हो गया।

इसी बीच वासुदेव श्रीकृष्ण के देह-त्याग का समाचार आया। अर्जुन को द्वारका भेजकर पता लगवाया। समाचार सच था। इससे युधिष्ठिर का हृदय उद्विग्न हो उठा। संसार की निस्सारता से उनका मन क्षुब्ध हो गया। उन्होंने सोचा, हम लोगों का समय भी अब सन्निकट है। चलने की तैयारी करनी चाहिए। जब श्रीकृष्ण चले गए तो यहाँ हम लोगों की क्या आवश्यकता है? एक दिन उन्होंने अर्जुन के पौत्र परीक्षित को राजपाट सौंप दिया। द्रौपदी के साथ पाँचों भाई हिमालय की ओर चले गए।

महाराज युधिष्ठिर का जीवन परीक्षा देते-देते ही बीता था। हर बार उन्हें महान कष्ट झेलने के बाद सफलता मिली थी। वन में उनके धर्मपूर्वक कठोर जीवन-यापन से देवगण अति शीघ्र प्रसन्न हो गए। वे आ-आकर उनसे स्वर्ग चलने का अनुरोध करने लगे। पर युधिष्ठिर अपने साथ द्रौपदी तथा भाइयों को भी स्वर्ग ले जाना चाहते थे।

मान्यता के अनुसार स्वर्ग पहुँचने के लिए हिमालय को पार करना जरुरी था। उसके बाद सुमेरु पर्वत पर पहुँचकर स्वर्ग सुलभ होता। किसी का सदेह स्वर्ग पहुँचना दुर्लभ था। देवताओं ने युधिष्ठिर को यह अवसर प्रदान किया।

युधिष्ठिर द्रौपदी और भाइयों को लेकर चल पड़े। हिमालय की बर्फीली चोटियों की ओर उनके पाँव बढ़ते गए। बर्फ की भीषण ठण्ड का कष्ट भी उन्हें अपने संकल्प से नहीं डिगा पाया। उन्हें स्वर्ग में श्रीकृष्ण से मिलने की आतुरता थी। आगे-आगे युधिष्ठिर उनके पीछे द्रौपदी तथा उनके पीछे अन्य चारों भाई। एक कुत्ता भी न जाने कब, कहाँ से उनके साथ हो लिया था। ये सभी बर्फ की बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। बर्फानी ठण्ड असह्य थी।

महारानी द्रौपदी बेहोश होकर बर्फ में गिर पड़ी और पुनः उठ न सकीं।

"महाराज, देखिए, महारानी बेहोश होकर गिर पड़ी हैं।" दुखी मन से भीम ने कहा। युधिष्ठिर ने ध्यान नहीं दिया। उन्होंने बस इतना ही कहा- **"ठहरने का समय नहीं है। आगे बढ़ो।"** उनके पाँव श्रीकृष्ण से मिलने हेतु उतावले थे।

अगले क्षण भीम ने पुनः कहा "महाराज़! सहदेव भी संज्ञाशून्य होकर गिर पड़े। आखिर, आप इतने निष्ठुर क्यों हो गए हैं?"

इसके बाद क्रमशः नकुल, अर्जुन तथा भीम भी निर्जीव होकर बर्फ में गिरते और गड़ते गए। युधिष्ठिर ने मुड़कर देखा तक नहीं। उनके नेत्र सजल थे। स्वर्ग के मार्ग में दो सहयात्री रह गए- **युधिष्ठिर** तथा वह कुत्ता। केवल कुत्ते का पदचाप ही उसके अनुगमन का बोध करा रहा था। उसकी स्वाभिभक्ति से वह प्रसन्न थे।

उन्होंने हिमालय को पार कर ही लिया।

देवताओं ने आकर उनका अभिनंदन किया। इन्द्र ने रथ से उतरकर उनका स्वागत कर कहा **"राजन्! इस दिव्य रथ पर विराजिए। आपको सदेह स्वर्ग जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है"।** मैं अपने भाइयों तथा सुख-दुःख में सदा साथ देने वाली महारानी द्रौपदी के बिना स्वर्ग कैसे जा सकता हूँ?

युधिष्ठिर को इन्द्र का प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं हुआ। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि वे सूक्ष्म शरीर से स्वर्ग पहुँच गये हैं तो उन्हें संतोष हुआ। उन्होंने चारों तरफ नजर दौड़ाई एक क्षण चुप रहने के बाद "कुत्ते से कहा वत्स! रथ में चढ़ जाओ।"

यह सुनकर इन्द्र ने कहा, महाराज! **सदेह स्वर्ग का सौभाग्य केवल आप को प्राप्त हुआ है।** इस हिंसक, अधम कुत्ते को नहीं। इसे आप को त्यागना होगा।

महाराज युधिष्ठिर ने कहा - मेरी पत्नी तथा भाइयों ने मेरा साथ नहीं दिया। असह्य कष्टों में भी इसने मेरा साथ नहीं छोड़ा। मैं इसका परित्याग कर कृतध्नता का भागी नहीं बन सकता।

पर, **महाराज् केवल आप को ही स्वर्ग में जाने का अधिकार मिला है। कुत्ता कैसे जा सकता है? इन्द्र ने अपनी बात पुनः सुनाई।**

"जब यह नहीं जा सकता तो मुझे भी स्वर्ग जाने की इच्छा नहीं है। युधिष्ठिर ने साफ-साफ बता दिया।"

तब केवल एक शर्त पर इसे स्वर्ग में प्रवेश मिल सकता है। आप अपने पुण्यार्जित लाभ स्वर्ग को इससे बदल लें। अर्थात् **"आप नरक में जाना स्वीकारें तो यह स्वर्ग जा सकता है।"** इन्द्र ने कहा। **"मुझे स्वीकार है।" मैं इसका अपकार नहीं होने दूँगा, भले ही मुझे नरक जाना पड़े। युधिष्ठिर ने सहर्ष सहमति दे दी।**

महाराज युधिष्ठिर की ये बातें सुनते ही सारा दृश्य बदल गया। आकाश 'धन्य-धन्य' की ध्वनि से गूँज उठा। देवगण पुष्पवृष्टि करने लगे। कुत्ता अपने असली रुप में प्रगट हो गया। सामने धर्मराज यम खड़े थे। उन्होंने कहा- **वास्तव में आप ही 'धर्मराज' कहलाने के अधिकारी हैं। आप अन्तिम परीक्षा में भी सफल हुए। आप की उदारता, करुणा, परोपकार और न्यायप्रियता सदा स्मरणीय रहेंगे। आइए, देर न कीजिए, रथारुढ़ होइए। स्वर्ग ही आपके लिए उपयुक्त धाम है।** ✧✧

महोत्सव का क्षण

महान संत रामकृष्ण परमहंस जी अपनी आयु के अंतिम दिनों में अतिरूग्णावस्था में थे। बढ़ती बीमारी को देखकर संत के भक्तों ने उनसे प्रार्थना की कि गुरुदेव, माँ काली के आप भक्त हैं। आप एक बार माँ काली से रोगमुक्ति के लिए प्रार्थना कर लीजिए। हमें पूर्ण विश्वास है कि माँ की कृपा से आप रोगमुक्त हो जायेंगे।

इस पर रामकृष्ण परमहंस मुस्कुराकर बोले- वात्सल्यमयी माँ स्वयं जानती है कि उसके पुत्र को क्या चाहिए। मैं माँ की गोद में हूं। उन्हें मेरा ख्याल है कि मेरे लिए क्या उचित है। उनकी सोच पर मैं अपने स्वार्थ का क्या बोझा डालूं और माँ की ही कृपा है कि विदायगी का क्षण भी मुझे महोत्सव का क्षण प्रतीत हो रहा है। ✧✧

खुशी चार आने कमाने की नहीं, उसके सही उपयोग की है

- एस.सी. कटारिया, रतलाम (मध्य प्रदेश)

एक राजा था जिसके पास सब कुछ था लेकिन मन अशांत था। शांति की खोज में वह अपना भेष बदलकर एक किसान के घर पर पहुंच गया। निर्धन किसान उस वक्त भोजन कर रहा था। राजा ने उसे कुछ स्वर्ण मुद्राएं देते हुए कहा यह तुम्हारे खेत में मुझे मिली हैं, इन्हें तुम रख लो। किसान ने मुद्राओं को देखा और कहा कि इसकी उसे बिल्कुल जरुरत नहीं है। वह अपने रोज के कमाए हुए चार आने से ही बहुत खुश है। राजा हैरान रह गया उसने किसान से पूछा कि **"तुम चार आने से क्या-क्या कर लेते हो?" किसान ने जवाब दिया कि इनमें से एक कुएँ में ड़ालता हूँ, दूसरे से कर्ज़ चुकाता हूँ, तीसरा उधार में देता हूँ और चौथा मिट्टी में गाढ़ देता हूँ।** राजा को कुछ समझ में नहीं आया, उसने किसान को अपना असली परिचय देते हुए उसकी बात का अर्थ पूछा किसान ने अपनी बात इस तरह से राजन को समझाई कि - **वह एक आना परिवार के भरण-पोषण में, दूसरा माँ-बाप की सेवा में तीसरा बच्चों की पढ़ाई में खर्च करता है और चौथे आने की बचत करता है।** किसान का जवाब सुनकर राजा को समझ में आ गया कि उसे भी सुख-शांति के लिए अपने धन का सद्पयोग कैसे करना चाहिए।

किसान के इस नीति शास्त्र के अनुसार की स्वतंत्र भारत के गृहमंत्री और उप प्रधानमंत्री श्री सरदार पटेल की हुंकार भरी बात याद आती है। जब उन्हें बेवफा जूनागढ़ के नवाब की हठधर्मी व पाक प्रेम का पता चला तो उन्होंने कहा कि **जिसे पाकिस्तान जाना है, वह चला जाए। उसे जाने के चार आने मेरी कमाई के मैं उसे देता हूँ। ये महापुरुषों की महान प्रेरणा जो जीवन सूत्र भी है।** ✧✧

दुरुस्त करें कंप्यूटर के दुष्प्रभावों से अपने आपको

आधुनिक युग की एक अनूठी देन कम्प्यूटर भी है। व्यवसाय के क्षेत्र में, घर, स्कूल व मनोरंजन हर जगह हमारी आंखें कम्प्यूटर से दो चार होती है। इस स्थिति में आंखों और शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को "कम्प्यूटर विजन सिन्ड्रोम" या "फिर कम्प्यूटर स्ट्रेस सिन्ड्रोम" की संज्ञा दी जाती है।

कम्प्यूटर का आंखों पर खराब प्रभाव

कम्प्यूटर पर जितने समय तक काम किया जायेगा, उसी अनुपात में आँख व दृष्टि संबंधी समस्याएं उत्पन्न होगी जिनमें मुख्य हैं। ❖आंख में सूखेपन का अहसास, जलन और चुभन होना। ❖शरीर में तनाव महसूस करना। ❖आंखों में बार-बार पानी आना। ❖आंखों में थकान महसूस करना। ❖कॉन्टैक्ट लेन्स के उपयोग में समस्या। ❖देखने में धुंधलापन महसूस होना।

इन बातों पर दें ध्यान।

कम्प्यूटर पर काम शुरु करने के पहले "आई टेस्ट" जरुर करवाएं। साल में एक बार यह टेस्ट करवाएं। कम्प्यूटर के इस्तेमाल वाले कमरे में तेज रोशनी नहीं होनी चाहिए। कम वोल्टेज बल्ब का और खिड़की पर पर्दे आदि का प्रयोग करें। चकाचौंध से बचने के लिए उजियाला नहीं होना चाहिए।

'20 का नियम अपनाएं। हर 20 मिनट के बाद 20 बात पलकें धीरे-धीरे झपकाएं।

काम करते समय आंखों की कसरत के लिये हर 20 मिनट के बाद दूर किसी चीज को 20 सेकेंड तक देखें। इसके अलावा 10 सेकेंड दूर और इसके तुरन्त बाद 10 सेकेन्ड तक पास की वस्तुओं को 10 बार देखें।

आंखों पर सीधे तौर पर पंखे, ए.सी. आदि की हवा न आने दें। ✧✧

मौसमी स्वास्थ्य सुझाव

हल्दी वाली हेल्दी चाय

- डॉ. कनुलाल जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)

हर कोई अपने दिन की शुरुआत एक प्याली चाय से ही करता है अब वे चाय की चुस्की हेल्दी भी बन जाए तो मजा दौगुना हो जाए। सर्दियों में तो इसकी तलब और भी बढ़ जाती हैं। ऐसे में इस बार 'हल्दी वाली चाय' ट्राई कीजिए। ये सिर्फ स्वाद ही नहीं प्रदूषण, धुंध से भी राहत दिलाने के साथ डेंगू, वायरल और फ्लू जैसी बीमारियों के रोकथाम में भी सहायक होती हैं।

हल्दी, शहद और काली मिर्च

हल्दी की चाय बनाने के लिए सबसे पहले दो कप पानी उबाल लें। इस पानी में हल्दी की एक इंच लबी जड़ डाल दें, अगर आपके पास हल्दी की जड़ उपलब्ध नहीं है। तो उसमें एक चम्मच हल्दी का पाउडर मिला दें। इसके बाद इस पानी को दो से तीन मिनट तक उबलने के लिए छोड़ दें। इब इसे एक कप में डालकर शहद और काली मिर्च पाउडर मिला लें। इस चाय की रोजना सुबह नाश्ते से पहले पियें।

□ डिप्रेशन से मिलेगी राहत

हल्दी, काली मिर्च और शहद के इस मिश्रण का सेवन करने से इम्युनिटी बढ़ती है। यही नहीं त्वचा के लिए हल्दी की चाय बहुत लाभदायक होती है। दिनभर सड़कों पर उड़ती धूल मिट्टी से चेहरे की चमक खो जाती है। हल्दी में एंटी इंफ्लेमेट्री गुण होते हैं जिससे स्किन की लालिमा और जलन कम की जा सकती है।

हल्दी में रसायन करक्यूमिन अवसाद निरोधकतत्व ग्रस्त पाया जाता है। जो एक दवाई के रुप में काम करता है। रोजाना हल्दी वाली चाय का सेवन करने से डिप्रेशन खत्म किया जा सकता है। साथ ही हल्दी में जो करक्यूमिन पाया जाता है, जिसे कोलेस्ट्राल आसानी से कम किया जा सकता है। यही नहीं इसके सेवन से मस्तिष्क के ऑक्सीजन इनटेक में भी ग्रोथ होती है। तो हो जाये हल्दी वाली चाय।

✧✧

घर का ना घाट का

कहते हैं कि एक बहुत ही गरीब धोबी था। एक दिन आसमान से सोने की वर्षा हुई। ध्ोाबी उस दिन अपने घर पर ही था, उसने देखा कि घर में जहां देखो सोने की वर्षा हो रही है। वह सोचने लगाा जैसे घर में सोने की वर्षा हो रही है, वैसे ही घाट पर भी सोने की वर्षा हो रही होगी। मेरे घर में मेरे अतिरिक्त तो कोई और आएगा नहीं, परन्तु घाट तो ऐसी जगह है जहां सब लोगों का आना-जाना है। क्यों न पहले घाट जाकर वहां का सोना इकट्ठा कर लाऊं। उसके बाद घर पर चैन से आकर सोना जमा करूंगा और चैन की बंसी बजाऊंगा। इस विचार से वह घाट पर पहुंचा तो वहां उसने देखा कि उससे पहले ही वहां मौजूद लोगों ने आसमान से बरसा सोना समेट लिया है निराश धोबी सोचने लगा कि अपने घर चल कर घर पर बिखरा पड़ा सोना ही चुन लूं। लेकिन जैसे ही घर पर पहुंचा तो पाया कि वहां का भी सारा सोना लोगों ने पहले ही उठा लिया। कहा जाता है कि शायद तभी से धोबी पर यह कहावत बन गई कि **'न घर रहा न घाट का'**।

✧✧

नववर्ष अभिनंदन

- प्रभा जैन, देवास (मध्य प्रदेश)

हम इस समय भौतिक युग में रह रहे हैं, आज का युग मोबाईल, लेपटॉप का युग है। इसने हमारी जीवनशैली ही बदल दी है। समय परिवर्तनशील है, प्रतिदिन तारीख बदलती है, दिन बदलते हैं, हमारी उम्र बदलती है, रोज हमारे नजरिये बदलते हैं और वर्ष भी बदलता है, इसी प्रकार 2017 पुराना होने जा रहा है और वर्ष 2018 वर्तमान बनने जा रहा है अर्थात्-

फिर पुराना कोट और शॉल लेकर आ गया,
हम सभी के लिए फिर नया साल आ गया।
कुछ नहीं बदला हालात हैं बिगड़े हुए,
नववर्ष फिर, नव संकल्प देने आ गया।

परंतु हम देखते हैं कि समय के साथ-साथ नववर्ष का उल्लास खुशी खत्म हो रही है, कम हो रही हैं क्योंकि आज के इस युग में भौतिकता की चकाचौंध में न तो स्वस्थ है और न सुखी। क्योंकि हमारी दिनचर्या मर्यादित नहीं है, जीवन में भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता का होना भी आवश्यक है।

हम नववर्ष का स्वागत करें, अभिनंदन कर व स्वस्थ व सुखी रहने के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित करें इसके लिए हमें जीवन में तीन बातों पर विशेष ध्यान देना होगा।

लक्ष्यः- हम कोई भी कार्य करें उसके लिये लक्ष्य बनाए, संकल्प लें इसके बिना हम कोई भी कार्य सुचारु ढंग से नहीं कर सकते। लक्ष्य को पूरा करने के लिए दृढ़ निश्चयी रहे लगनशील रहे। किसी भी कार्य करने में परेशानियाँ आ सकती हैं, परंतु हमें निराश नहीं होना चाहिए। मन में उत्साह, उमंग को बनाए रखें व पुरुषार्थ करते रहें।

कर्त्तव्यः- आज के युग में अधिकांश व्यक्ति अधिकार की बात करते हैं परंतु कर्त्तव्य को भूल जाते हैं। जबकि कर्त्तव्य और अधिकार एक-दूसरे के पूरक हैं। हम हमारे कर्त्तव्यों पर अड़िग रहे, नववर्ष में हम इस बात चिंतन-मनन करें कि हमारे बड़ों के प्रति क्या कर्त्तव्य है, जहाँ कर्त्तव्य की बात आती है ऑफिस में, किसी भी क्षेत्र में अपना कर्त्तव्य पूरा करें। हमें अवश्य सफलता मिलेगी व प्रसन्नता, खुशी का एहसास होगा।

समयः- मनुष्य जीवन में समय का विशेष महत्त्व है, हम समय के महत्त्व को समझें। कहा जाता हे कि हाथ से निकला हुआ समय, धनुष से छूटा हुआ तीर और मुँह से निकले शब्द कभी वापस नहीं आते। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, काल की गति प्रवाहमान है। हमें समय का सही प्रबंधन करना चाहिए, जो व्यक्ति समय का सही उपयोग करता है, उसको समय कभी कम भी नहीं पढ़ता, हमारा संकल्प हो कि-

"भूत तो समनाथ, भविष्य कल्पना है, वर्तमान अपना है"। अर्थात् बीते हुए कल को याद कर वर्तमान को खराब न करें।

क्षण-क्षण को सार्थक करें, हमारा जीवन तो एक गणित की तरह है, सांसें रोज घटती जा रही है, आयुष्य कम होता जा रहा है, अनुभव जुड़ते जा रहे हैं हर क्षण सार्थक कर, अनुकूल, प्रतिकूल, जिंदगी में हर क्षण मुस्कराएं। उपरोक्त बातों का चिंतन, मनन अनुसरण कर संकल्प बनाएं और नई चेतना, नया उमंग, उल्लास के साथ आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर हो अच्छे शुभ भाव, शुद्ध भाव, शुभमंगल भावना रखें। ठीक ही है।

आलस्य किसी का आदर्श नहीं होता, संघर्ष के बिना हर्ष नहीं होता। उन्नति का महान शत्रु है प्रमाद, आलस्य, प्रमाद छोड़ करें नववर्ष का स्वागत, अभिनंदन।

✧✧

युवा शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ ...

युवा शाखा द्वारा महामांगलिक एवं संघपति सम्मान समारोह

नाशिक (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा एवं नाशिक जिल्हा स्थानकवासी जैन महासंघ द्वारा आयोजित **'हम बदलेंगे, युग बदलेगा'** नववर्ष एक जनवरी 2018 के दिन पंडित रत्न उप-प्रवर्तक पू. श्री प्रमोद मुनि जी म. आदि ठाणा, गोडल सम्प्रदाय उव्वसग्गहरं स्तोत्र साधक राष्ट्रसंत पू. श्री नम्रमुनि जी म. आदि ठाणा, युवा केशरी, संस्कार मंच प्रणेता पू. श्री सिद्धार्थ मुनि जी म. आदि ठाणा, महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पू. श्री ज्ञानप्रभा जी मं. आदि ठाणा, प्रवर्तिनी पू. श्री चंदनाजी म. एवं स्पष्ट वक्ता पू. श्री अक्षयज्योति जी म. आदि ठाणा, प्रवचन प्रभाविका, पू. श्री दर्शप्रभा जी म. एवं पू. डॉ. श्री अनुपमा जी म. आदि ठाणा, शासन प्रभाविका पू. श्री मंगलज्योति जी म. आदि ठाणा, सरल स्वभावी पू. श्री संयमप्रभाजी म. आदि ठाणा, सरल स्वभावी पू. श्री संयमप्रभा जी म. आदि ठाणा, मधुर वक्ता पू. श्री जागृति जी म. आदि ठाणा आदि गुरु भगवंतों के पावन सान्निध्य में नाशिक में **'महामांगलिक एवं संघपति सम्मान समारोह'** श्री संघ रविवार कारंजा नाशिक, श्रीसंघ नाशिक रोड़, श्री संघ सिड़को, श्री संघ द्वारका, श्रीसंघ पावन नगर, श्रीसंघ म्हसरुल, श्रीसंघ दत्तनगर, श्रीसंघ सातपुर, श्रीसंघ त्रिमूर्ति चौक, श्रीसंघ केवड़ी बन, श्रीसंघ गोविंदनगर, कोठारी जैन स्थानक एवम् नाशिक शहर/जिला के सभी श्रीसंघ के तत्वावधान में **चोपड़ा लॉंस, नाशिक** में होने जा रहा है। इस समारोह में आप सभी उपस्थित होकर आनंद ले एवं संत-सतीवृंद दर्शन, प्रवचन का लाभ उठाए। **प्रेषक : शशिकुमार कर्नावट**

टैलेन्ट सुपरस्टार की संपूर्ण भारतवर्ष में धूम

मुंबई (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा के तत्वावधान में जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा मुंबई द्वारा पूरे भारतवर्ष से जैनों की प्रतिभा को मुंबई में विश्वस्तरीय मंच देने हेतु एक विशाल आयोजन आयोजित किया गया है, जिसका नाम है **"टैलेन्ट सुपरस्टार"**। पिछले महीने 14 नवंबर को लांच किए गए इस रियल्टी शो को मात्र 20 दिन में पूरे भारत में अविश्वसनीय प्रतिसाद मिला है। टैलेन्ट सुपरस्टार की सोच रखने वाले एवं मुंबई जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा अध्यक्ष श्री सुनीलजी मेहता ने बताया कि मात्र 20 दिन में टैलेन्ट सुपरस्कार के फेसबुक को लगभग 5 लाख लोगों ने देखा एवं अब तक 12000 प्लस लाइक हो चुकी है। बॉलीवुड़ के प्रसिद्ध कलाकार, एक्टर एवं एंकर विकल्पजी मेहता होंगे होस्ट और दिखाएंगे बेहद शानदार परफार्मेंस अपनी टीम के साथ। इस प्रतियोगिता में मुंबई, दिल्ली, जम्मू, चेन्नई, गुजरात, छत्तीसगढ़, राजस्थान, कलकत्ता, असम, आन्ध्र प्रदेश और भारत के अनेक राज्य और शहरों से इस प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे हैं और अविश्वसनीय प्रतिसाद मिल रहा है। जिसे आप fb.com/talentsuperstarhunt पर देख सकते है। जिसे लेकर बॉलीवुड के प्रसिद्ध कलाकार इसमें रूचि दिखा रहे है और कुछ इस ऐतिहासिक आयोजन के मुख्य अतिथि भी होंगे। आयोजन में मुंबई की कई संस्थाओं के अध्यक्ष मुख्य अतिथि के रूप में पधारेंगे। सभी चयनित किए गए प्रतियोगियों को ऑडीशन के लिए मुंबई में बुलाया जाएगा, जहां से सिर्फ 21 या उससे कम प्रतियोगी को ग्रैन्ड फिनाले के लिए चुना जाएगा। ग्रैन्ड फिनाले 7 जनवरी को फाइन आर्ट ऑडिटोरियम, चेम्बूर में होगा। इसकी तैयारी में युंवा संरक्षक सर्वश्री पारसजी मोदी जैन, महेन्द्रजी पगारिया जैन, निमेशजी राठौड़ जैन, गुणवंतजी खेरोदिया जैन, भगवतीजी मांडोत जैन, राजेशजी दुग्गड़ जैन, विजयजी पोखरना जैन, विनोदजी वड़ाला जैन, महेन्द्रजी कोठारी जैन, जयंतीजी परमार जैन, मनीषजी सांखला जैन, संजय जी सियाल जैन, दिनेशजी कोठारी जैन, मुकेशजी सांखला जैन, मुकेशजी राजावत जैन, सुरेशजी राजावत जैन, पिन्टूजी मेहता, रविजी सियाल, राजेशजी सोनी, अंकितजी मेहता, पंकजजी हिरण, कमलेशजी डांगी, गौरवजी पोखरणा आदि लगे हुए है। **प्रेषक : सुनील मेहता जैन**

समाचार - प्रकाश

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. का जनकुपुरा मंदसौर में मंगल प्रवेश

मंदसौर (मध्य प्रदेश) : दिनांक 1 दिसम्बर को मंदसौर में श्रमण संघीय आचार्य पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. एवं संत मंडल का भव्य मंगल प्रवेश हुआ। आचार्य श्री इंदौर में चातुर्मास पूर्ण करने के उपरांत विहार करते हुए दो दिवसीय प्रवास पर मंदसौर पहुंचे। यहां पर उप प्रवर्त्तक श्री अरुणमुनि जी म., संत श्री सुरेशमुनि जी म. आदि ठाणा 2 से मंगल मिलन हुआ। आचार्य श्रीजी सभी संतवृंद के साथ नवनिर्मित श्री जैन दिवाकर मूल तपोभवन स्थानक जीवागंज में पधारे। आचार्यश्री के मंगल प्रवेश व मंगल प्रवचन में हजारों की संख्या में स्थानकवासी जैन समाज सहित नगर के कई गणमान्य नागरिकगण शामिल हुए। यहां श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ अध्यक्ष अनिल संचेती सहित स्थानकवासी जैन समाज के कई वरिष्ठजनों ने उनकी अगवानी की। इस अवसर पर स्थानकवासी जैन समाज का चल समारोह निकाला गया। भगवान श्री महावीर के जयकारे लगाते हुए तथा जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म. की जय जयकार करते हुए धर्मालुजनों ने उन्हे मंदसौर में प्रवेश कराया।

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. ने यहा आयोजित धर्मसभा में कहा कि जनकुपुरा स्थानक सभी स्थानकवासी जैन समाज के अनुयायियों के लिये तीर्थ स्थल के समान पवित्र धाम है। क्योकि इस स्थानक भवन में 85 महान जैन आचार्य एवं संतो का पदार्पण हुआ है। यह भूमि जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म. के चातुर्मास की साक्षी रही है। इस स्थानक का नवनिर्माण कराकर जनकुपुरा श्री संघ ने 300 वर्ष पुराने जैन स्थानक को नया स्वरुप प्रदान किया है। धर्मसभा में उपप्रवर्त्तक श्री अरुणमुनि जी म., श्रमणसंघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि जी म., सहमंत्री श्री शुभममुनि जी म. ने अपने विचार रखे। धर्मसभा का संचालन श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जनकुपुरा अध्यक्ष श्री अनिल संचेती ने किया।

इस अवसर पर नगरपालिका अध्यक्ष श्री प्रहलाद बंधवार, पूर्व मंत्री श्री नरेन्द्र नाहटा, श्री महेन्द्र चोरडिया, श्री सौभाग्यलमल जैन, श्री प्रकाश रातडिया, श्री सुरेन्द्र लोढ़ा बापूलाल संचेती, श्री विनोद कुदार, महावीर जैन, रवींद्रसिंह रांका, सौ. पुष्पा रांका, श्री कांतिलाल रातड़िया, श्रीकमल कोठारी आदि गणमान्य नागरिको ने सहभागिता की तथा आचार्यश्री व अन्य जैन संतो की अगवानी कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

महावीर स्वामी ने हमें साधना का मार्ग बताया -आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.

आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. ने शनिवार 2 दिसम्बर को नयापुरा रोड़ स्थित माहेश्वरी धर्मशाला में आयोजित धर्मसभा में कहा कि भगवान महावीर ने हमें धर्म साधना का मार्ग बताया है, उसे जीवन में आत्मसात करें। कई जन्मों से हम शरीर को हष्ट-पुष्ट करने के लिए आहार ले रहे है, लेकिन क्या हमने आत्मकल्याण के लिए कुछ किया है, उस पर विचार करें।

उपप्रवर्त्तक पूज्य श्री अरुणमुनि जी म., श्रमण संघीय प्रमुखमंत्री पूज्य श्री शिरीषमुनि जी म., श्रमण संघीय सहमंत्री युवामनीषी पूज्य श्री शुभममुनि जी म. ने भी धर्मसभा में प्रवचन दिए। धर्मसभा में लाभार्थी परिवार का वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ जनकुपुरा शहर, खानपुरा और नई आबादी श्रीसंघ के साथ ही सकल जैन समाज ने बहुमान किया। धर्मसभा में शशि मारु और गर्वित मारु पे स्तवन प्रस्तुत किया। श्री

ध्रुव जैन ने धर्मसभा में बेटी बचाओं पर कविता पढ़ी तथा आचार्य श्री गुणों की वंदना की। महिला मंडल ने भी स्तवन प्रस्तुत किया। गौतम प्रसादी के लाभार्थी श्री अजीत कुमार जैन परिवार का जनकुपुरा श्री संघ श्री अध्यक्ष अनिल संचेती, उपाध्याय श्री विजय दुग्गड़ शहर श्री संघ अध्यक्ष श्री बापूलाल संचेती, मंत्री श्री चांदमल मुरड़िया आदि ने बहुमान किया। इस अवसर पर श्री विजय दुग्गड़, श्री नरेंन्द्र मारु, श्री कोमलसिंह दुग्गड़, श्री राजेंद्र पोरवाल, श्री अशोक मारु, जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री प्रकाश रातड़िया, सकल जैन समाज संयोजक श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, कांगेस नेता श्री राजेश सिंह रघुवंशी आदि उपस्थित थे। संचालन पत्रकार श्री संजय लोढ़ा ने किया।

दिनांक 3 दिसम्बर को पिपलीया मण्डी 4 दिसम्बर को मल्हारगगढ़ होते हुए दिनांक 6 दिसम्बर को नीमच पधारे। उपप्रवर्त्तिनी महासाध्वी पू. श्री सुभाषाजी म., महासाध्वी पू. श्री मुक्तिप्रभा जी म. आदि साध्वी वृंद से मिलन हुआ। नीमच की भूमि जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म. की जन्म भूमि है। यहां पर श्री संघ ने आचार्य भगवन् का हार्दिक अभिनंदन किया। दो दिन के प्रवास में जनमानस ने आत्म ध्यान साधना का अनुभव लिया। दिनांक 10 दिसम्बर को आचार्य श्री जी राजस्थान में प्रवेश करेंगे। निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, कपासन होते हुए 22 दिसम्बर को फतेहनगर पहुचेगें जहाँ श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म. से मधुर मिलन होगा।

प्रेषकः शमितमुनि

चित्रकूट नगर उदयपुर मे होगी शीतकालीन आत्म ध्यान साधना

उदयपुर (राजस्थान) : आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव युगप्रधान ध्यानगुरु आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शीतकालीन एकांत आत्म ध्यान साधना हेतु शोभा रसिकलाल एम धारीवाल पब्लिक स्कूल, अपोजिट पैसेफिक कॉलेज, चित्रकूट नगर, भुवाणा, प्रतापनगर बाईपास, नियर पी एफ ओफिस, उदयपुर में विराजमान रहेंगे। प्रति रविवार प्रातः 10:30 बजे ही सामूहिक मांगलिक एवं दर्शन लाभ होंगे। दर्शनार्थी आचार्य श्रीजी की साधना में पूर्ण सहयोग दे। सम्पर्क सूत्रः श्री ओंकारसिंह सिरोया,मो. : 09414167574

प्रेषकः शमितमुनि

उपप्रवर्तक पूज्यश्री विनयमुनि जी म. का 66वाँ जन्म दिवस तप-त्याग व धर्म आराधना से मनाया गया।

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्रमण संघीय उपप्रवर्तक पूज्यश्री विनयमुनि जी म. का 66वाँ जन्म दिवस समस्त संत-सतीवृंद के पावन सान्निध्य में मंजूनाथ नगर, बैंगलोर स्थित समुदाय भवन में श्री आदर्श जैन नवयुवक मंडल द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में पूज्य श्री संजयमुनिजी म., पूज्य श्री फूलचंद जी म. ने गुरु गुणगान में स्तवन प्रस्तुत किया। महासती पूज्यश्री पूनम जी म. ने कहा गुरु का सान्निध्य हमारे जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है, विनयमुनि जी म. का जीवन अत्यंत सरल है। आप जीवन में प्रबल पुरुषार्थ करते हैं। आपके जन्म-दिवस पर हम कोटि-कोट वंदन नमन करते हैं।

इस पावन प्रसंग पर लोकमान्य संत रुपमुनि जी म., भीष्मपितामह पूज्य श्री सुमतिप्रकाशजी म., उपाध्याय पूज्यश्री विशालमुनिजी म., उपाध्याय पूज्यश्री रमेशमुनिजी म. प्रवर्तक पूज्य श्री राजेन्द्रमुनि जी म. अन्य संत-सतीवृंद का शुभमंगल कामना व धर्म संदेश प्राप्त हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री जंबुकुमारजी दुग्गड़, ज्ञानचंदजी लोढ़ा, हितेशजी कोठारी, सुरेन्द्रजी आँचलिया, पारसमलजी लोढ़ा, दिनेशकुमारजी बंब, विनोदजी

खाबिया, देवीलालजी पितलिया, सौ. शकुंतलाबाईजी मेहता, सौ. राखीजी नाहर, सौ. स्नेहाजी तातेड व अन्य ने अपने विचार व स्तवन प्रस्तुत किए। श्री आदर्श जैन नवयुवक मंडल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के आयोजक सर्वश्री तिलोकचंदजी रेदासनी, पारसमलजी लोढ़ा, घिसूलालजी नाहर, राजेन्द्रजी रेदासनी, धीरजजी नाहर, प्रकाशजी तातेड़, उत्तमचंदजी लोढ़ा, हितेशकुमारजी कोठारी, एवं योगेशकुमारजी चौधरी रहे। सभा का संचालन श्रीनेमीचंदजी दलाल ने किया। श्री आदर्श जैन नवयुवक मंडल के अध्यक्ष श्री रेखचंदजी लोढ़ा व अन्य पदाधिकारियों ने सभी का आभार व्यक्त किया। पूज्यश्री कन्हैयालाल जी म. की 17वीं पुण्यतिथि समारोह पत्रिका का विमोचन बंब परिवार व श्री आदर्श नवयुवक मंडल के पदाधिकारियों व सदस्यों द्वारा किया गया।

प्रेषकः नेमीचंद दलाल जैन

तप त्याग से मनाया गया उपाध्याय पू. डॉ. श्री विशालमुनिजी म. का जन्मोत्सव

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री एस.एस. जैन संघ माम्बलम के तत्वावधान तथा श्रमण संघीय तपस्वी रत्न पू. श्री सुमतिप्रकाश जी म. के सुशिष्य आगम ज्ञाता पू. श्री डॉ. समकित मुनिजी म. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में बर्किट रोड़ स्थित श्री कन्वेंशन हॉल में आयोजित समारोह में श्रमण संघ के प्रथम युवाचार्य मधुकर मुनि का 34वां पुण्य स्मरण दिवस एवं वरिष्ठ उपाध्याय पूज्य डॉ. श्री विशालमुनि जी म. का 65वाँ जन्मोत्सव तप-त्याग के साथ मनाया गया। इस प्रसंग पर संघ की तरफ से सामुहिक नवकार महामंत्र जाप व सामुहिक एकासना का आयोजन रखा गया, जिसमें लगभग 800 से भी ज्यादा श्रद्धालु भक्तों ने भाग लिया। पू. श्री सुमति विशाल एजुकेशनल ट्रस्ट के सौजन्य से जाप एवं एकाशन में भाग लेने वालों में श्रावक-श्राविकाओं का लकी-ड्रा कूपन के आधार पर पुरस्कार वितरित किया गया।

खचा-खच भरे श्री हाल में पू. श्री जयवंत मुनि एवं टी. नगर महिला मंडल के स्वागत गीत से समारोह की शुरुआत हुई। इस मौके पर डॉ. समकित मुनिजी म. ने युवाचार्य मधुकर मुनि व उपाध्याय पूज्य डॉ. श्री विशालमुनि जी म. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार पूर्वक प्रकाश ड़ाला। मुनिश्री ने नेपाल के एक अबोध बालक खगाराम से मुनि विशाल तक की संयम यात्रा का सुन्दर सारगर्भित वर्णन प्रस्तुत किया और कहा कि विशालमुनि गुरु सुमति के प्रति पूर्ण समर्पित है।

श्री संघ उपाध्यक्ष डॉ. उत्तमचंद गोठी ने समारोह में भाग लेने वाले सभी श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत व अभिनंदन किया एवं गुणानुवाद करते हुए कहा कि दोनों महापुरुष श्रमण संघ की महान विभूति थे और दोनों ने श्रमण संघ की आन बान और शान को बढ़ाया। पेरम्बूर श्री संघ के उपाध्यक्ष श्री धर्मीचंद दर्डा जैन, मार्ग दर्शक श्री शंकरलाल पटवा जैन एवं श्री पारस जे. नाहर जैन ने भी अपने विचार रखे। समारोह का संचालन डॉ. उत्तमचंद गोठी जैन एवं मंत्री महेन्द्र गादिया जैन ने संयुक्त रूप से किया।

सहमंत्री श्री प्रकाश कोठारी जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया। सहमंत्री श्री इन्द्रचंद्र लोढ़ा ने धन्यवाद प्रेषित किया। सर्वश्री राजमल नाहटा, दिलीप गादिया, उदयराज सेठिया, महावीर छाजेड़, आशीष मोदी, राजेश चोपड़ा, सुरेश बाघमार एडवोकेट, दिलीप लोढ़ा, सुशील-संजय धोका, दीपक सेठी, कमलेश नाहर, प्रेम पोकरणा, गौतम कोठारी, सतीश मुणोत, चेतन प्रकाश पोकरणा, गौतम मुथा, दीपक सेठिया ने कार्यकर्त्ता के रुप में श्री संघ को अपनी सेवाए प्रदान की।

प्रेषकः डॉ. उत्तमचंद गोठी

जैन कॉन्फ्रेंस प्रतिनिधि मण्डल द्वारा महामहिम श्री रामनाथ कोविन्दजी को 'शताब्दी श्रर्द्धाचन' एवं अन्य ग्रन्थ भेंट

नई दिल्ली : पूर्व सांसद श्रीमती डॉ. अनीताजी आर्या, जैन महासंघ-दिल्ली के अध्यक्ष श्री एस. पी. जैन जी एवं जैन कॉन्फ्रेंस के प्रतिनिधि मण्डल में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री विमलजी जैन-अम्बाला, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य मार्गदर्शक श्री अतुलजी बोकरिया जैन-दिल्ली ने परम आदरणीय रामनाथजी कोविंद को राष्ट्रपति भवन में **'शताब्दी श्रद्धार्चन धर्म ग्रन्थ'** एवं श्री **'यश गौरव गाथा'** ग्रन्थ भेंट करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर जैन धर्म एवं समाज हितैषी सम-सामायिक चर्चाएं हुई।

प्रेषक : माणक शाह

दिल्ली के अशोका होटल में मराठी न्यूज पेपर के दिल्ली संस्करण का लोकार्पण

नई दिल्ली : गुरुवार दिनांक 14 दिसम्बर 2017 को दिल्ली के अशोका होटल में महाराष्ट्र एवं गोवा राज्यों के लोकप्रिय मराठी न्यूज पेपर लोकमत के दिल्ली संस्करण का लोकार्पण माननीय उप-राष्ट्रपति श्री वैंकेय्या नायडूजी, केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन जयराम गड़करी जी, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर जी, केन्द्रीय मंत्री कानून और न्याय, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी श्री रविशंकरजी प्रसाद, दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद जी केजरीवाल तथा गणमान्य सांसदगण एवं राजनेतागण तथा लोकमत न्यूज पेपर के मालिक श्री राजेन्द्रजी बाबू दर्डा जैन एवं विजयजी बाबू दर्डा जैन आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य एवम् युवा शाखा-दिल्ली के प्रमुख मार्गदर्शक श्री अतुलजी बोकरिया जैन ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर लोकमत न्यूज पेपर के मालिक श्री राजेन्द्रजी बाबू दर्डा जैन एवं विजयजी बाबू दर्डा जैन को लोकमत के दिल्ली संस्कार के लोकार्पण एवं उसकी सफलताओं की शुभकामनाएं प्रेषित की। गौतलब है कि लोकमत न्यूज पेपर महाराष्ट्र एवं गोवा राज्यों में मराठी भाषा का सबसे लोकप्रिय एवं नंबर एक की पोजिशन पर कायम समाचार पत्र है। दिल्ली एनसीआर में भी इस न्यूज पेपर की काफी मांग हैं।

प्रेषक : महेन्द्र बोकरिया जैन

स्व. प्राचार्य प्रकाश पगारिया स्मृति में आयोजित 33वाँ रक्तदान शिविर

पुणे (महाराष्ट्र) : शिक्षाविद एवम् समाजसेवी स्व. प्राचार्य श्री प्रकाशजी पगारिया जैन की स्मृति में 1 दिसम्बर 2017 को श्री पार्श्वनाथ युवक मण्डल के तत्वावधान में 33वाँ रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। स्मरण रहे 1985 से प्रतिवर्ष यह शिविर मानवता के हित में आयोजित किया जाता है। इस वर्ष 'आधार ब्लड़ बैंक' हेतु विशेष प्रयास किए गए। 43 लोगों ने रक्तदान शिविर में भागीदारी करके रक्तदान किया।

इस अवसर पर श्री श्रेयसजी पगारिया जैन, श्री पंकजजी पगारिया जैन, श्री पंकजजी कटारिया जैन, श्री राहुलजी बाफना जैन, श्री रोहनजी बोहरा जैन, श्री मंगेशजी बोहरा जैन, श्री संदीपजी फुलफगर जैन, श्री राहुलजी पगारिया जैन, श्री कल्पेशजी पगारिया जैन, श्री मयूशजी पगारिया जैन, सौ. मनीषा गडेकरजी, श्री विलासजी पगारिया जैन एवम् श्री ईश्वरजी बोहरा जैन आदि ने अपना योगदान दिया। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्रेषक : मंत्री पार्श्वनाथ युवक मण्डल

कासारवाड़ी जैन श्रावक संघ के 2017-20 के लिए नई कार्यकारिणी का गठन

अध्यक्ष पद पर श्री संदीपजी फुलफगर व महामंत्री पद पर श्रेयसजी पगारिया का चयन

पुणे (महाराष्ट्र) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक कासारवाड़ी में हॉल ही में 2017-20 तीन वर्ष के लिए नई कार्यकारिणी का चयन सर्वसम्मति से हुआ। युवा कार्यकर्ता श्री संदीपजी फुलफगर जैन-अध्यक्ष एवं श्री श्रेयसजी पगारिया जैन-महामंत्री बने। नव चयनित अध्यक्ष महोदय ने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार इस प्रकार से किया है : - कोषाध्यक्ष श्री संदीपजी कर्नावट जैन, उपाध्यक्ष सर्वश्री राजेन्द्रजी चोरड़िया जैन, राजेन्द्रजी देसरड़ा जैन, अरुणजी बोरा जैन, अनिलजी कटारिया जैन, नयनजी भंडारी जैन, प्रशांतजी बाफना जैन, स्वागताध्यक्ष श्री विलासकुमारजी पगारिया जैन, सहसचिव श्री किरणजी भंडारी जैन, सह-खजिनदार श्री पंकजजी कटारिया जैन, प्रमुख मार्गदर्शक सर्वश्री अमरंचदजी कुवाड़ जेन, अमृतलालजी भंडारी जैन, शांतिलालजी फुलफगर जैन, प्रा. अशोककुमार जी एन. पगारिया जैन, विनोदलालजी बोरा जैन, बसंतलालजी बोरा जैन तथा वरिष्ठ मार्गदर्शक मण्डल में 12 महानुभावों को मनोनीत किया गया है। जनसंपर्क अधिकारी श्री मंगेशजी बोरा तथा पाठशाला समन्वयक श्री स्नेहलजी भंडारी जैन, श्री पंकजजी कांकरिया जैन को मनोनीत किया गया है।

प्रेषक : श्रेयस पगारिया जैन

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा मनोनीत नवगठित विश्वस्त मण्डल के सदस्य

श्री मोहनलाल लालचंद चोपड़ा जैन, नासिक	**श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर**
श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	**श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद**
श्री आनंद प्रकाश जैन, दिल्ली	**श्री आनन्दमल छल्लानी जैन, चेन्नई**
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	**श्री महेन्द्र पगारिया जैन, रेलमगरा**

साऊथ दिल्ली में चातुर्मास की समाप्ति पर उमड़ा जैन समाज

नई दिल्ली : श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा साऊथ दिल्ली, न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी जैन स्थानक जे. आर. भवन के तत्वावधान में ऐतिहासिक चातुर्मास बहुत ही धर्म प्रभावना के साथ संपन्न हुआ। आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव, युग प्रधान आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि जी म. के आज्ञानुवर्ती, श्रमण संघीय सलाहकार, भीष्म पितामह, राजर्षि पूज्य गुरुदेव श्री सुमति प्रकाश जी म. की सुशिष्या, परम दीप्त तपस्विनी, तप चक्रेश्वरी, तप-सिद्धेश्वरी, परम पूज्य गुरुवर्या महासाध्वी पू. श्री विभाश्री जी म., तप चन्द्रिका महासाध्वी पू. श्री आभाश्री जी म. ने सभी महानुभावों व स्थानीय संघ के पदाधिकारियों एवं सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि साऊथ दिल्ली, न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी का यह चातुर्मास ऐतिहासिक रहा है, जिसका श्रेय सभी को जाता है।

संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषजी ओसवाल जैन ने स्वागत कार्यक्रम को पूर्ण किया। इस श्रृंखला में विशेष सहयोगी श्री महेशजी जैन, श्री विनयजी जैन 'कागजी', श्री राजकुमारजी जैन, श्री संदीपजी जैन 'मिक्की', कोषाध्यक्ष श्री आदेशजी जैन, श्री नवनीतजी जैन, श्री अजयजी जैन शामिल थे। श्रीमती संगीताजी जैन, श्री सोनिया जी जेन, श्री नीलमजी ओसवाल जैन, श्रीमती पुष्पजी डुगरिया जैन, श्रीमती रेनूजी जैन, श्रीमती एकताजी जैन आदि उपस्थित थे। इस चातुर्मास को सफल बनाने में श्री अशोकजी लोढ़ा जैन का सराहनीय योगदान रहा। उपस्थित महानुभावों व महिलाओं ने विदाई गीत प्रस्तुत किये। **प्रेषक : अशोक लोढ़ा जैन**

सामायिक स्वाध्याय भवन के दान की घोषणा

हैदराबाद (तेलंगाना) : साध्वी पू. श्री विमलेशप्रभा जी म., पू. श्री यशप्रभा जी म., पू. श्री पद्मप्रभाजी म., पू. श्री भक्तिप्रभा जी म., पू. श्री ज्योतिप्रभा जी म., पू. श्री विदेहाश्री जी म., पू. श्री विरक्ताश्री जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में तिरुमलगिरी स्थित सत्य साई कालोनी में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सामायिक स्वाध्याय भवन के निर्माण की घोषणा की गई। श्री मोहनलाल मातुश्री सोहनीबाई सुपुत्र कैलाशचंद श्रीपालचंद शांतिलाल महावीरचंद कमल किशोर, विनोद कुमार एवं समस्त देशलहरा परिवार की ओर से अपने निजी भवन को स्वाध्याय भवन के लिए प्रदान किया गया। इसके लिए देशलहरा परिवार के सभी सदस्यों ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के क्षेत्रीय प्रधान श्री हस्तीमल गुंदेचा, संघ के त्रयनगर अध्यक्ष श्री दलपतराजजी छाजेड़ एवं मंत्री श्री शांतिलाल जी गुंदेचा को प्रवचन सभा में प्रदान किया। इस भवन में साधु मर्यादाओं के अनुसार धर्माराधना की व्यवस्था रहेगी। समस्त जैन समाज के लिए यह भवन काम में लिया जाएगा। भवन को साधना के अनुकूल तथा विभिन्न धार्मिक आयोजनों के योग्य बनाने के बाद विधिवत उद्घाटन कराया जाएगा। भवन की व्यवस्था के लिए संघ के केन्द्रीय कार्यालय से परामेर्श कर देशलहरा परिवार के ट्रस्टियों के साथ मिलकर आगे की व्यवस्था होगी।

धर्मसभा में देशलहरा परिवार का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर पू. श्री विमलेशप्रभा जी म. ने दान की महिमा बताई। श्री हस्तीमल जी गुंदेचा जैन, श्री निर्मल जी सिंघवी, श्री बोलाराम संघ के मंत्री श्री नरेन्द्रजी सुराणा ने अपने विचार रखें। मुमुक्षु महावीर पितलिया एवं सोनम कटारिया का स्वागत किया गया। प्रवचन सभा का संचालन श्री हस्तीमलजी गुंदचा जैन ने किया। **प्रेषक : श्रीपाल देशलहरा**

पूज्य श्री गणेशलाल जी म. की 56वीं पुण्यतिथि कार्यक्रम 16 जनवरी को जालना में

जालना (महाराष्ट्र) : जैन समाज के आराध्य, पूजनीय, जन-जन के तारणहार, कर्नाटक गजकेसरी, खादी के प्रणेता, घोर तपस्वी गुरुदेव पूज्य श्री गणेशलाल जी म. की 56वीं पुण्यतिथि समारोह दिनांक 16 जनवरी 2018 मंगलवार को विविध धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रमों के साथ पू. श्री विवेकमुनि जी म., पू. श्री गौरवमुनि जी म., पू. श्री दिलीपकंवर जी म., पू. उज्जवलकंवर जी म., नवकार आराधिका पू. श्री प्रतिभाकंवर जी म., स्पष्ट वक्ता पू. श्री सुशीलकंवर जी म., पू. श्री किरणसुधा जी म., पू. श्री प्रशांतकंवर जी म., पू. श्री नमिताजी जी म. आदि संत-सतीवृंद के साथ श्रमण संघ के अनेकों संत-सतीवृंद के पावन सान्निध्य में हर्षोल्लास से मनाई जा रही है। इस अवसर पर संपूर्ण भारतवर्ष से लाखों भक्तगण जालना की इस पावन तपोभूमि पर पधारकर धर्म प्रभावना में सहभागी होंगे। **प्रेषक : स्वरूपचंद ललवाणी जैन**

पू. श्री कमलेश मुनि जी म. को उत्तर प्रदेश में वी.आई.पी. का दर्जा

अयोध्या (उत्तर प्रदेश) : जैन दिवाकरीय राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनि जी म. 'कमलेश' की लखनऊ प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगीजी ने उत्तर प्रदेश शासन को पलक पावड़े बिछा कर स्वागत सेवा एवं धर्म प्रभावना के लिए पूर्ण समर्पित करने का आदेश सरकार के सचिव श्री मणिप्रसाद मिश्र जी ने लिखित रूप से पूरे उत्तर प्रदेश में डीजीपी, आईजी, एसपी सभी के नाम विशेष आदेश जारी करते हुए वी. आई.पी. के रूप में राष्ट्रसंत की सेवा के लिए आदेश कलेक्टर श्री सुबोध कुमारजी शाह कानपुर वालों को शिक्षा सचिवालय लखनऊ में सौंपा गया। मुनि कमलेश के गौ-सेवा ध्यान के राष्ट्रीय स्तर के प्रयासों की सराहना करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में एक-एक बड़ी गौशाला जिसमें करीब 75 हजार गायों का गौशाला में पालन होगा।

प्रथम चरण में 35 जिलों में चालू करने का काम प्रारंभ हो गया, 75 जिलों के अंदर अति शीघ्र गौशाला चालू की जाएगी। संवर्धन का काम होगा, रिसर्च सेंटर बनेगार, उत्तर प्रदेश से गौमांस का निर्यात किसी कीमत पर नहीं होगा, गौ संवर्धन को प्राथमिकता दी जाएगी। मुनि कमलेश जी ने माननीय मुख्यमंत्री श्री योगीनाथजी के प्रयासों की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस दिन धरती पर गाय की एक भी रक्त की बूंद नहीं गिरेगी उसी दिन राम राज्य का सपना साकार होगा।

आपने अंत में समाज को एवं सरकार को आव्हान करते हुए कहा कि अब वह समय आ गया है कि गाय और राम मंदिर पर अयोध्या से क्रांति का शंखनाद किया जाए। आपके साथ पू. श्री कौशल मुनि जी म., पू. श्री घनश्याम मुनि जी म., साधक मानेसर भी शासन की प्रभावना में निरंतर प्रयत्नशील है। इस दौरान पू. श्री कमल मुनि जी म. के सान्निध्य में रामस्नेही घाट पर हनुमान मंदिर के अंदर आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की दीक्षा जयंती अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच, नई दिल्ली की ओर से पुरातत्व विभाग एवं प्रमाण पर सेमिनार का आयोजन हुआ। आनंद दीक्षा जयंती के प्रसंग पर मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी जी ने 17 बड़ी गौशालाएं निर्माण की घोषणा की।

प्रेषक : श्री मणिराम दास, वासुदेव घाट श्री अयोध्यापुरी

शोक समाचार

सहज सरलतम धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रीसुजानमल जी कटारिया पंचतत्वों में विलीन

रतलाम (मध्य प्रदेश) : पूरा जीवन शिक्षा व धर्म जगत को अर्पित करने वाले से सेवा निवृत शिक्षक व सुश्रावक श्री सुजानमल कटारिया 80 वर्ष का यहाँ दुःखद निधन हो गया। निवास स्थान से शनिवार दोपहर को अंतिम यात्रा निकाली गई। अंतिम यात्रा में समाजनों, स्नेही मित्रों व शिक्षित जगत के नागरिकों ने भाग लिया। मुक्तिधाम त्रिवेणी पर हुई शोक सभा में शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष श्री कृष्णचन्द्र ठाकुर जैन श्वे. स्था. समाज के श्री सोहन नान्देचा ने अपनी मौन श्रद्धांजलि श्री कटारिया जी को दी। वे सहज सरल धर्मनिष्ठ सुश्रावक थें अस्वस्थता की वजह से अपने घर पर ही रहकर नियमित स्वध्याय करते थे। आप पू. गुरु भगवंत आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषि जी म. और उनके शिष्य मंडली के साथ मालव सिंहनी बा.ब. प्रवर्तनी पं. रत्न कुंवर जी म. व उनकी शिष्या सहित पूरा परिवार उनका अनन्य भक्त होकर पूर्ण रूप से उनके प्रति समर्पित थे। स्थानीय आनंद धाम ऋषि सम्प्रदाय ट्रस्ट के मानद ट्रस्टी थे। **प्रेषकः एस. सी. कटारिया**

श्री सुभाषचंदजी बेदमुथा जैन का निधन मरणोत्तर नेत्रदान

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : औरंगाबाद जिले के धर्म प्रेमी जैन श्रावक, नम्रता ब्रोकर्स के संचालक श्री सुभाषचंद बेदमुथाजी जैन का 11 नवम्बर 2017 को 69 वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। आप जैन-अजैन समाज बंधुओं की समस्याओं का निदान करने के लिये हमेशा तत्पर रहते थे। आपके निधन के पश्चात आपकी इच्छानुसार नेत्रदान किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस के सदस्य साईं आनंद कैटर्स के संचालक श्री रमेशजी श्री प्रकाश जी आदि ने उनका नेत्रदान करके समाज में एक आदर्श का निर्माण किया। आप अपने पीछे सुसंस्कारित भरापूरा परिवार छोड़ गये है। हम आपके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।**प्रेषकः किशनलाल बेदमुथा**

उद्योगपति श्री नरेन्द्रजी उत्तमचंदजी खिंवसरा जैन का स्वर्गवास

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : श्री नरेन्द्रजी उत्तमचंदजी खिंवसरा जैन का शुक्रवार 1 दिसम्बर 2017 को 52 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। परम पूज्य गुरुदेव श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म. 'कुमुद' आपके गुरु थे । आपने अपने परिवार को सामाजिक, धार्मिक पटल पर आगे बढ़ाते हुए सेवा-धर्म-पुण्य के अनेकों कार्य किए। अपने परिवार के सभी सदस्यों का सदैव दिया व समाज में आगे बढ़ने में हर संभव कार्य व सहयोग किए। आप श्रीसंघ की सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर शामिल होते थे। साामाजिक क्षेत्र में प्रसिद्धि के साथ आपने औद्योगिक जगत में अपनी अच्छी पहचान बनाई हुई थी। आप अपने पीछे माताजी श्रीमती कमलाबाईजी उत्तमचंदजी खिंवसरा जैन, भाई श्री सुभाषजी, किशोरजी, अनिलजी तथा बहन सौ. सुनंदाजी रूणवाल, पुत्र श्री निखिलजी, बहु सौ. तोरलजी, पोती एवं बेटी सौ. प्राचीजी रूपेश जी ब्रह्मेचा जैन आदि सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। आपकी बेटी सौ. प्राचीजी मुंबई निवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अनिलजी ब्रह्मेचा जैन की बहुरानी है एवं जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष श्री अनिलजी खिंवसरा जैन की भतीजी हैं। भगवान वीर प्रभु आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

प्रेषक : सुभाष खिंवसरा जैन

श्री नेमीचंदजी दुगड़ुलालजी बेदमुथा जैन का हृदयगति रूक जाने से स्वर्गवास

लासलगांव (महाराष्ट्र) : शुक्रवार, दिनांक 8 दिसम्बर 2017 को श्री नेमीचंदजी दुगड़ुलालजी बेदमुथा जैन निवासी लासलगांव (महाराष्ट्र) का 73 वर्ष की आयु में हृदयगति रूक जाने से अकस्मात स्वर्गवास हो गया । आप पीएच जैन परिवार, मुंबई के दामादजी एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन के बड़े जीजाजी थे । आप एक आदर्श सुश्रावक रत्न एवं सरल व्यक्तित्व के धनी, सामाजिक कार्यकर्ता थे। आपने अनेकों स्थानीय सामाजिक संस्थाओं के साथ जुड़कर अपने अनुभव से बहुत से सामाजिक, धार्मिक कार्यों में हिस्सा लिया। नित्य साधु-साध्वीजी महाराज की सेवा में अग्रसर रहकर उनकी सेवा की तथा अपने परिवारजनों को ऐसे ही धार्मिक, सामाजिक संस्कार प्रदान किए।

शुक्रवार को अचानक हृदयगति रूक जाने से आप इस दुनिया को अलविदा कह गए। आपके चले जाने से समाज के कभी न पूरी होने वाली क्षति हुई है। आप अपने पीछे धर्मपत्नी सौ. लीलाबाईजी, पुत्र श्री मनोजजी जैन, पुत्री व दामादजी सौ. कविता रमेशजी संचेती जैन-वडालीभोई एवं सौ. संगीता सुनीलजी समदड़िया जैन-जालना, पौत्र श्री हर्षलजी, पौत्री दियाजी बेदमुथा जैसा सुसंस्कारित एवं सभ्य परिवार छोड़ कर गए हैं। समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भगवान वीर प्रभु से प्रार्थना करता है कि आपकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें एवं बेदमुथा परिवार को इस दुःख की घड़ी को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

प्रेषक : महावीर चोपड़ा जैन

श्रीमती सुमनजी जैन-अम्बाला का हृदयगति रूक जाने से स्वर्गवास

अम्बाला सिटी (हरियाणा) : सोमवार दिनांक 4 दिसम्बर 2017 को श्रीमती सुमनजी जैन धर्मपत्नी श्री विमलजी जैन, राष्ट्रीय मंत्री जैन कॉन्फ्रेंस निवासी अम्बाला सिटी (हरियाणा) का रात्रि में हृदयगति रूक जाने से देवलोक गमन हो गया। आपके पति श्री विमलजी जैन के विषय में सर्वविदित ही है कि वे एक आदरणीय समाजसेवी, साधु-साध्वीजी महाराज की सेवा में सदैव अग्रणी एवं तत्पर रहते हैं, अपने जीवन में सदैव ही विनम्र और सेवा भावनाओं को अनुप्राणित रखते हैं। ठीक उसी प्रकार से ही श्रीमती सुमनजी जैन का जीवन भी सदा ही त्याग, तपस्या और साधु-साध्वी जी महाराज की सेवा में व्यतीत हुआ। आपने, अपने परिवार को पूर्ण रूपेण संस्कारित रखने में अहम भूमिका निभाई।

उनके अंतिम संस्कार एवं श्रद्धांजली सभा में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, श्री औंकारसिंहजी सिरोया जैन, श्री विमलप्रकाशजी जैन, श्री जगदीश चन्द्रजी जैन राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी पगारिया जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री जयकुमारजी जैन, पूर्व राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री निमेशजी राठौड़ जैन, हरियाणा प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनयजी जैन, पंजाब प्रांतीय अध्यक्ष श्री राकेशजी जैन 'लक्की', श्री देशबन्धुजी हिंगड़ जैन, श्री सुभाष जी पगारिया जैन, हरियाणा युवा प्रांतीय अध्यक्ष श्री अमनजी जैन आदि जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण एवं समाज के

गणमान्यजनों ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोकाकुल परिवार को ढ़ाढ़स बंधाया।

आप जैसी पुण्य आत्मा का चले जाना वास्तव में असहनीय, हृदयविदारक है। जैन कॉन्फ्रेंस समस्त परिवार की ओर से, आपके एवं आपके परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवदेना प्रकट करती हैं, आपको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भगवान वीर प्रभु से प्रार्थना करती है कि आपकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

प्रेषक : अतुल जैन

सुश्राविका सौ. शशिकलाजी अभयजी बरड़िया जैन का निधन

परतवाड़ा (महाराष्ट्र) : धर्मनिष्ठ सुश्राविका सौ. शशिकला अभयजी बरड़िया सुपुत्री धर्मनिष्ठ श्रावक श्रीमान घेवरचंद जी चोपड़ा-नंदुरबार का दिनांक 12 अक्टूबर 2017 को 67 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन धर्म से ओत-प्रोत था। आप बहुत हीसरल स्वभावी, मिलनसार थी। आपने अपने जीवन में मासखमण 16, 11, 8 वर्षीतप, मौन ग्यारस, ज्ञान पाचम तप, आयंबिल ओली, कई बार तेले की तपस्याएं की। प्रतिदिन 4-5 सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय करती थी। रात्रि भोजन व जमीकंद के त्याग थे। आपने सजोड़ 12 वर्ष पहले आजीवन शीलव्रत का नियम ग्रहण किया था। आप सदा धार्मिक कार्य, प्रश्नमंच, धार्मिक प्रतियोगिता में सदा अग्रसर रहती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

प्रेषक : सुनील बरड़िया जैन

श्रीमती चमेलीबाई लालचंदजी बोथरा जैन-पुणे का स्वर्गवास

पुणे (महाराष्ट्र) : शुक्रवार, दिनांक 1 दिसम्बर 2017 को श्रीमती चमेलीबाईजी लालचंदजी बोथरा जैन निवासी पुणे (महाराष्ट्र) का 68 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया । आप श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थाकनवासी जैन कॉन्फ्रेंस के मुंबई-पुणे प्रांतीय अध्यक्ष श्री कांतिलालजी बोथरा जैन की भाभीजी थी। आप एक धर्मनिष्ठ, आदर्श सुश्राविका थी, साधु-साध्वीजी महाराज की सेवा करना, दैनिक प्रवचनों में शामिल होना, तप-त्याग आदि करना आपको अत्यधिक पसंद था। इसी तरह के संस्कारों से आपने अपने पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखा। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री नितीनजी जैन एवं श्री किरणजी जैन तथा सुपुत्री सौ. स्वातीजी शशिकांतजी सांखला जैन-नासिक एवं बहुए, पौत्र, पौत्रियों सहित भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़ कर गई हैं। समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार आपको श्रद्धांजलि अर्पित करता है। भगवान वीर प्रभु आपकी आत्मा को सद्गति प्रदान कर, अपने चरणों में स्थान प्रदान करें।

प्रेषक : रमेश सांखला जैन

धर्मनिष्ठ सुश्राविका सौ. सम्पतबाईजी कोठारी जैन का संथारापूर्वक समाधि मरण

रतलाम (मध्य प्रदेश) : श्री धर्मदास जैन की वरिष्ठ वयोवृद्ध श्राविका सौ. सम्पतबाईजी कोठारी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलालजी कोठारी जैन थांदलावाले का 4 सितम्बर 2017 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आप 86 वर्ष के थी और पूज्य गुरुदेव श्री उमेशमुनि जी म. व प्रवर्तक पूज्यश्री जिनेन्द्रमुनि जी म. के प्रति अनन्य श्रद्धावंत थी। आपने 3 सितम्बर 2017 को अणुवत्स पूज्य श्री संयतमुनि जी म. के मुखारबिन्द से जीवन भर के लिए परिग्रह के त्याग कर लिये थे। 4 सितम्बर 2017 को प्रातः संथारे के प्रत्यात्थान श्री अशोकजी कोठारी जैन व श्री मयूरजी वागरेचा संजैली ने करवाए। आप सरल व्यतित्व की धनी, करुणामयी व धार्मिकता से ओतप्रोत थी। आपने परिवार के समस्त कर्त्तव्यों को कर्मठता से निभाया एवं परिवार को सुस्कारित बनाया।

प्रेषकः श्री अशोक जैन कोठारी

सुश्राविका श्रीमती उमराव कँवरजी बागमार का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : धर्मनिष्ठ तपस्विनी सुश्राविका **श्रीमती उमराव कँवरजी बागमार** (धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्दजी बागमार, मेड़तासिटी वाले) का **7 दिसम्बर 2017** गुरुवार शाम 73 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। श्राविका ने एकासन व्रत सम्पन्न करके चौविहार प्रत्याख्यान लिया और शाम को हृदय गति रुक जाने से दिवंगत हो गईं। सरलता, उदारता और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति श्राविका ने जीवन में अनेक तपस्याएँ कीं। देव, गुरु, धर्म के प्रति अनन्य आस्थावान श्राविका सभी सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों की सेवा में तत्पर रहती थीं। सामायिक-स्वाध्याय और व्रत-नियम उनके जीवन के अभिन्न अंग थे। वे अपने पीछे सुसंस्कारित, सुशिक्षित और सेवाभावी भरापूरा परिवार छोड़ गईं। उनके सुपुत्र सर्वश्री महावीरचंद, प्रकाशचंद, उत्तमचंद और पदमचंद ने माँ की स्मृति में संघ सेवा और परोपकार के लिए बड़ी राशि समर्पित की। **प्रेषक : महावीरचंद प्रकाशचंद बागमार**

धर्मनिष्ठ सुश्राविका सौ. लहरदेवीजी जैन का देवलोक गमन

उदयपुर (राजस्थान) : धर्मनिष्ठ सुश्राविका सौ. लहरदेवीजी जैन धर्मपत्नी स्व. मोहनलाल जी मोदी का स्वर्गवास हो गया। वह 90 वर्ष की थीं जिन्होंने अपने जीवन में 10 वर्षीतप, 100 से ऊपर अठाईयां, 25 ओलीपत कल्याणक, विहरमानतम, बड़ा पकवासा, छोटा, पकवासा, परदेशी राजा के बेले 9,10,11 एवं 16 उपवास, 1000 के ऊपर तेले, बेले एवं उपवास एकांतर की तपस्या की। 60 वर्षो से चौवीहार, श्रवण-भादवा एवं पांचों तिथियाँ के लिलोती के त्याग किये। दिनांक 08.05.2013 को आपने अपना जीवीत महोत्सव साधुसंतों के सान्निध्य में सम्पन्न करवाया। दिनांक 09.11.2017 प्रातः सामायिक में ही ब्रेन हेमरेज की तकलीफ हुई और 10.11.2017 को प्रातः 6 बजे बैकुंठवास हो गया। आपने अपने पीछे दो पुत्र श्री सुरेश कुमार जैन, श्री भगवतीलाल मोदी जैन, गौरव-महावीर पोत्र, ललितादेवी-श्री मनोहर सिंह जी भंडारी, सुशीलादेवी-श्री भगवतीलालजी भीमावत (पुत्रियां-दामाद), सरिता-श्री राहुल जी धाकड़ (पौत्र-दामाद) जागृति-दिव्या-पौत्रियां से भरापूरा परिवार धर्म ध्यान से संस्कारित छोड़ गये हैं।

प्रेषकः सुरेश कुमार जैन

सुश्राविका वीरमाता श्रीमती कमलाबाई मरोटी जैन का देवलोक गमन

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : सुश्राविका वीरमाता श्रीमती कमलाबाई मरोटी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री सोनकरन मरोटी जैन का दिनांक 21 नवम्बर 2107 को दोपहर 1:15 बजे 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपके निधन का समाचार सुनकर समूचा जैन समाज स्तब्ध रह गया। श्रीमती कमलाबाई मरोटी जैन पूरे जैन समाज में "बाईजी" के नाम से पहचानी जाती है। पूज्यबाई जी धार्मिक संस्कारों की जीवंत प्रतिमूर्ति है। सभी स्वजनों परिचित जनों को देवदर्शन पूजन धर्म ध्यान की सतत् प्रेरणा देते रहना आपकी दैनिक दिनचर्या का अंग था। आपका जीवन बहुत ही सरल सादगीपूर्ण एवं मिलनसार था। आपके सुसंस्कारों की छाप आपकी संतानों पर अमिट रूप से पड़ी हैं आपने अपनी दोनों पुत्रियों का जिन शासन की सेवा में समर्पित किया है जो कि नवकार जमेश्वरी साध्वी पूज्य श्री शुभंकराश्री जी म. सा. एवं साध्वी पूज्य श्री वसुंधरा श्रीजी म. सा. के नाम से जिन शासन में दैदीप्यमान है। आपकी भतीजी भी साध्वी पूज्य श्री आत्मदर्शना श्रीजी म. सा. के नाम से जिन शासन में सेवारत है। आपके चिरंजीव श्री राजेन्द्र मरोटी भी ऊर्जावान व्यतित्व के धनी है। दिनांक 1 दिसम्बर 2017 को आयोजित श्रद्धांजलि सभा में पूज्य बाईजी के देहावसान को जैन श्रीसंघ की अपूरणीय क्षति बताया।

प्रेषक : राजेन्द्र मरोटी जैन

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

एच एस रांका फॅमेली

द्वारा

स्थापित एवम संचालित

रांका फेमेली फाउन्डेशन्स

आध्यात्म एवम संस्कृति विकास तथा स्वास्थ्य एवम शिक्षा सेवार्थ

25 वर्षो से समर्पित (1992-2017)

- आचार्य श्री नानेश सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल - बेलापुर, नवी मुंबई
- आचार्य श्री नानेश बॉयज हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश गर्ल्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश डायलिसिस सेंटर - अंधेरी, मुंबई
- महासतीश्री यश वर्किंग वूमन्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- रांका भवन (आध्यात्म-विकास) - वर्ली सीफेस, मुंबई
- रांका सदन (जनसेवा-प्रकल्प) - वर्ली, मुंबई
- रांका निकेतन (संस्कृति-विकास) - वर्ली, मुंबई
- शंकर समता भवन (जैन-स्थानक) - भीलवाडा, राजस्थान-सहभागिता
- आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट - दांता, राजस्थान-सहभागिता
- अन्य समाज सेवी संस्थाओं में सहभागिता/ सहयोग एवम् संचालन

जनसेवा ही जिनेश्वर की सेवा है - स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश

ADVT.

RNI NO. – 2123/57
Date of Posting 23-24/12/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
दिसम्बर 2017, द्वितीय पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 20 December, 2017

जीवन प्रकाश योजना प्रमुख आधार स्तम्भ

श्रीमान भंवरलाल जी वागरेचा जैन
एवं
श्रीमती मधुदेवी वागरेचा जैन

(नमाणा, कांकरोली, जिला राजसमंद(राज.) वाले, सांताक्रूज-घाटकोपर मुम्बई

श्रीमान भंवरलाल जी वागरेचा जैन

श्रीमती मधु देवी जी वागरेचा जैन

गांव नमाणा, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) निवासी श्रीमान उदयलाल जी सा. वागरेचा एवं श्रीमती सुन्दरबाई सा. वागरेचा के सुपुत्र श्रीमान भंवरलाल जी सा. वागरेचा का जन्म 4 जुलाई 1942 को धर्मनिष्ठ वागरेचा जैन परिवार में हुआ।

आपकी धर्मपत्नी मधुदेवी जी एक धर्मनिष्ठ सुश्राविका है। आपके परिवार में दो सुपुत्र हैं श्रीमान रजनीश कुमार जी वागरेचा एवं पुत्रवधु श्रीमती मंजुबाई वागरेचा एवं श्रीमान कमलेश कुमार जी वागरेचा एवं पुत्रवधु श्रीमती स्नेहलता जी वागरेचा हैं इस परिवार में आपकी बड़ी पुत्री श्रीमती विम्मीजी का घानीणा (राज.) निवासी श्रीमान अशोक कुमार जी तातेड़ से विवाह हुआ। इस परिवार की हंसती मुस्कुराती फुलवारी में पौत्र श्रीमान ऋषि बागरेचा एवं श्रीमती प्राची वागरेचा, श्री अंशुल एवं श्रीमती नेहा, हर्ष कुमार और तेजस्विनी वागरेचा है। आपकी एक पौत्री सुश्री पौनी वागरेचा।

आपकी धर्मनिष्ठा जितनी प्रखर है, उतनी ही लोकसेवा भी अनुकरणीय है। आप आचार्य श्री तुलसी साधना शिखर राजसमंद के ४० वर्षों से कार्यकारी अध्यक्ष हैं। ओसवाल समाज कांकरोली के मुख्य ट्रस्टी है। उपाध्यक्ष के रूप में आप 'हरीतिमा विकास समिति' राजसमंद के लिए सेवाएँ दे रहे हैं।

आपकी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक सेवाएँ भी अत्यंत विस्तृत हैं। आप गायत्री शक्तिपीठ आचार्य कुल राजस्थान, अ.भा. शिक्षण संसद, अ.भा. जतन संस्थान आदि के संरक्षक हैं।

श्री द्वारिकाधीश मंदिर मंडल, कांकरोली, लोक अधिकार मंच एवं साहित्यकार परिषद राजसमंद में परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर चुके हैं। आप अध्यक्ष के रूप में जैन एकता मंच मेवाड़, नगर विकास समिति, कमला नेहरू अस्पताल, कृषि उपज मंडी समिति, वस्त्र व्यापार संघ, तेरापंथ समाज (नमाणा), विज्ञान समिति, प्रबुद्ध नागरिक विचार मंच आदि में सक्रिय रहकर अपनी सेवाओं से प्रभावित कर चुके हैं।

आपके संस्थानों प्रतिष्ठानों में सागरमल आनंदीलाल एंड कं., कांकरोली, अरिहन्त मार्बल, कावेरी ज्वैलर्स, सान्ताक्रूज, मुम्बई स्वस्तिक ग्रुप ऑफ कम्पनीज् घाटकोपर मुम्बई आदि हैं।

आपने अपनी मानवीय भावनाओं के आलोक में जैन कॉन्फ्रेंस की 'जीवन-प्रकाश' योजना में प्रमुख आधार स्तम्भ बनकर अनुकरणीय योगदान दिया है। आपको आभार सहित हार्दिक बधाई।

-प्रकाशक

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री) | महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) | संजय बोथरा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष जीवन प्रकाश योजना) | लादूलाल बाफना जैन (राष्ट्रीय मंत्री जीवन प्रकाश योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित